गांधीजीकी कुछ चुनी हुअी पुस्तकें

अहिंसक समाजवादकी ओर	१.००
आरोग्यकी कुंजी	०.४४
खादी	२ ००
गांवोंकी मददमें	०.४०
गीताका सन्देश	०.३०
गोसेवा	१.५०
पंचायत राज	०.३०
बापूकी कलमसे	२.५०
बापूके पत्र मीराके नाम	३.००
बापूके पत्र सरदार वल्लभभाअीके नाम	३.००
बुनियादी शिक्षा	१.५०
मंगल-प्रभात	०.३७
यरवडाके अनुभव	१.००
रामनाम	०.५०
विद्यार्थियोंसे	२.००
विश्वशांतिका अहिंसक मार्ग	०.४०
शरीर-श्रम	०.२५
सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा	१.५०
सत्य ही अीश्वर है	०.८०
संतति-नियमन : सही मार्ग और गलत मार्ग	०.४०
सर्वोदय	२ ००
साम्यवाद और साम्यवादी	०.२०
स्त्रियां और अुनकी समस्याअें	१.००
हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण	१.५०
	०.७०

डाकखर्च अलग

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४

प्रस्तावना

सत्य और अहिंसा जैसे गहन विषयों पर गांधीजीके लेख और भाषण पढ़कर दूरके पाठक अनके मोहक और विनोदी व्यक्तित्वके साथ अन्याय कर बैठे तो आश्चर्य नहीं होगा। अैसा ही अन्याय दूरसे गांधीजीका दर्शन करनेवालोंने भी शायद अनके साथ किया हो। पाठकोंको अैसा भी लगना संभव है कि बार-बार अीश्वर और धर्मकी बातें करनेवाले गांधीजी किसी पादरी जैसे गंभीर स्वभावके पुरुष होंगे। परन्तु अनके निकट सम्पर्कमें कुछ ही मिनटका समय बितानेवालोंका अैसा भ्रम तुरन्त दूर हो जाता था। जीवनके अनेक पहलुओंमें गांधीजीके जीवनका अेक पहलू विनोदसे भरा हुआ था। जो असंख्य स्त्री-पुरुष अनके सम्पर्कमें आये, अन सब पर गांधीजीके अिस विनोदी और लोह-चुम्बक जैसे आकर्षक व्यक्तित्वका असर हुआ था, और अिसीके बल पर गांधीजीने अनेक विरोधियोंको अपना मित्र बना लिया था। अनके विनोदमें कहीं कड़वाहट, द्वेष या तिरस्कारका भाव नहीं दिखाओ देता था। गांधीजीका स्वभाव अैसा विनोदी नहीं होता, तो राष्ट्रके महान प्रश्नोंके भारके नीचे वे दब गये होते।

गांधीजीको हंसते और खिलखिलाते देखकर कुछ लोग आश्चर्यसे पूछते थे कि अितनी भारी और गंभीर जिम्मेदारियोंका बोझ सिर पर होते हुअे भी गांधीजी कैसे तो स्वयं हंस सकते हैं और कैसे दूसरोंको हंसा सकते हैं? गांधीजी कहा करते थे कि चाहे जैसे कठिन और दुःखद अवसरों पर भी मैं हंस सकता हूं, अिसीलिअे जिम्मेदारीका अितना भारी बोझ अुठा सकता हूं। अनका शिशुओंके समान सरल हास्य अनके व्यक्तित्वको अनोखी शोभा प्रदान करता था। अिसलिअे जिसे महात्माजीका अन्मुक्त हास्य देखनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, वह अन्हें पहचान नहीं सकता।

अेक मित्रसे कहे हुअे गांधीजीके अिन वाक्योंसे अुनकी विनोद-वृत्तिका रहस्य हमें स्पष्ट समझमें आ जाता है: "मुझमें अगर विनोदकी वृत्ति नहीं होती, तो रोज-रोज अनेक दिशाओंसे मुझ पर जो हमले होते हैं, अुन्होंने मुझे कभीका खतम कर दिया होता। लेकिन ओश्वरमें मेरी जीती-जागती श्रद्धा है। जब तक वह मुझे रास्ता बता रहा है, तब तक दूसरे मेरे बारेमें क्या कहते हैं अिसकी मुझे बिलकुल परवाह नहीं है। अुनकी टीकाओंको मैं हंसकर अुड़ा देता हूं; और जो लोग मुझ पर हंसते हैं अुन पर भी मैं हंस सकता हूं।"

गांधीजीके अिस अुन्मुक्त हास्यकी फुहार अुनकी वाणीमें निरन्तर अुड़ती ही रहती थी। अैसे हास्य और विनोदके प्रसंगोंमें से कुछको चुनकर यहां रखनेका मैंने नम्र प्रयत्न किया है।

लल्लुभाओी मकनजी

अनुक्रमणिका

१. बापा

गांधीजी अुन दिनों महाबलेश्वरमें आराम कर रहे थे। अिस मौकेका लाभ अुठाकर कस्तूरबा-स्मारक-फंडके ट्रस्टियोंने महाबलेश्वरमें ही ट्रस्टकी मीटिंग रखी। गांधीजी अध्यक्षपद पर आसीन थे। अेक प्रश्न पर ट्रस्टके सदस्य अपनी अपनी राय पेश कर रहे थे। गांधीजीके छोटे पुत्र श्री देवदास गांधी भी ट्रस्टके सदस्य होनेके नाते वहां मौजूद थे। अुन्हें कुछ कहना था, लेकिन अपनी बात कहते अुन्हें संकोच हो रहा था। आखिर वे बोले :

"बापू, अिस प्रश्न पर मुझे भी कुछ कहना है।"

गांधीजी "जरूर, तुम्हें जो ठीक लगे वह जरूर कहो।"

देवदास "लेकिन बापू, मुझे तो आप जिस बातका समर्थन कर रहे हैं, अुसके विरुद्ध कहना है।"

गांधीजी (हंसकर) "आज्ञाकारी पुत्रको अपने पिताके मुंह पर अैसी बात कहते संकोच हो, यह स्वाभाविक है। लेकिन तुम्हें मनमें अैसा संकोच नहीं रखना चाहिये। तुम्हें जो भी कहना हो कहो।"

फिर ठक्करबापाकी ओर अुंगली दिखाकर अुन्होंने जोड़ा "लेकिन देखना, यहां अेकके बदले दो बापा[1] बैठे हैं। मैं तुम्हारी परेशानी समझ सकता हूं।"

राजाजी सभामें थोड़ी दूर बैठे बैठे यह विनोद सुन रहे थे। देवदास गांधीके ससुर होनेके नाते वे भी अुनके पिता ही माने जायंगे न! अुन्होंने कहा :

"बापू, यहां दो नहीं, परन्तु तीन बापा बैठे हैं!"

सारी सभा जोरसे हंस पड़ी।

---

१. बापाका अर्थ पिता या बाप ।

२. बेचारा दिल!

सभ्य समाजकी अेक अगुआ मानी जानेवाली महिला गांधीजीके काफी परिचयमें आओी थी। अेक दिन अुसने गांधीजीके बारेमें कुछ गैर-जिम्मेदारीकी बात किसीसे कही। यह बात गांधीजी तक पहुंची। अैसी अुड़ती बातके बारेमें पूरी जांच किये बिना अुसे सच माननेसे गांधीजीने अिनकार किया। यह अफवाह कहां तक सच है, यह जाननेके लिअे गांधीजीने अुसी महिलासे पुछवाया।

गुस्सेमें अुसने कहला भेजा: "मुझसे क्या पुछवाते हैं? अपने दिलसे ही पूछिये न!"

गांधीजीने अुस बहनको अेक विनोदी पत्र लिखा:

"तुम बहुत गंभीर मालूम होती हो, लेकिन मुझे तो हंसना ही चाहिये। वरना मैं मर जाअू। तुम्हारी जीभ किसीके कानमें चुपकेसे कुछ कह दे, तो मेरा यह बेचारा दिल अुसे कैसे जान सकता है?"

३. सौ शरद जियें

सन् १९४२ में अ० भा० कांग्रेस महासमितिकी बैठकमें गांधीजीने कहा था कि अब मुझे १२५ वर्ष जीना है। अुसके दूसरे ही दिन सरकारने अुन्हें आगाखां महलमें कैद कर दिया। वहां अुन्होंने २१ दिनका अुपवास किया। अुपवासके बीच अेक दिन गांधीजीकी तबीयत बहुत चिन्ताजनक हो गअी। सब कोअी हृदयसे यही प्रार्थना कर रहे थे कि बापूजी सकुशल अिस जेलसे बाहर निकल जायं। अुस कड़ी अग्नि-परीक्षामें से भी गांधीजी पार हो गये। बीमारीकी वजहसे सरकारने अुन्हें जेलसे रिहा किया, तब सबने अुनके स्वास्थ्य-सुधारके लिअे भगवानसे प्रार्थना की। भारतके वयोवृद्ध नेता पंडित मदनमोहन मालवीयजीने भी तारके जरिये अपनी शुभ कामना पहुंचाअी.

"मानव-जाति और भारतमाताकी सेवा करनेके लिअे प्रभु आपको सौ शरदका (सौ वर्षका) आयुष्य प्रदान करे।"

लेकिन गांधीजी तो १२५ वर्ष जीना चाहते थे। शायद गांधीजीने काग्रेस महासमितिमें अिस सम्बन्धमें जो अुद्गार प्रकट किये थे, अुनकी जानकारी मालवीयजीको नहीं होगी। अिसलिअे अपने विनोदी स्वभावको शोभा दे, अैसे लाक्षणिक अुत्तरमें गांधीजीने अपनी १२५ वर्ष जीनेकी अिच्छा मालवीयजीको बताअी।

"आपका शुभेच्छाका तार मिला। लेकिन कलमके अेक ही झटकेमें आपने मेरे जीवनके २५ वर्ष काट डाले! खैर, अब अिन २५ वर्षोंको आप अपनी अुमरमें जोड दीजिये।"

यह अुत्तर पढ़कर क्या वयोवृद्ध मालवीयजीके चेहरे पर हास्यकी मधुर रेखा नहीं फैल गअी होगी?

४. प्राणी-संग्रहालयका प्राणी

गोलमेज परिषदमें हाजिर रहनेके लिअे गांधीजी अिग्लैण्ड गये थे। वहां बहुतसे मुलाकाती अुनसे मिलने आते थे। अेक बार अेक भारतीय विद्यार्थी अपनी अमरीकी पत्नीके साथ गांधीजीसे मिलने आये।

अुस युवतीको देख लेनेके बाद गांधीजीने विद्यार्थीसे पूछा. "अपनी पत्नीको आप हिन्दुस्तान ले जायगे न?"

अेक तरहकी घबराहट और सकोचका अनुभव करते हुअे अुन विद्यार्थी भाअीने 'हां' कहा।

अब वह अमरीकी युवती आगे आअी। वह सुन्दर और चचल थी। आत्म-विश्वासकी भावना भी अुसमें अधिक मालूम होती थी। अुसने पूछा. "महात्माजी, आप अमेरिका कब आयगे?"

गांधीजी: "अभी तुरन्त तो नहीं।"

युवती: "लेकिन वहांका हर आदमी आपको देखनेके लिअे अधीर बन गया है।"

गांधीजी अपने मित्रोंके जरिये अच्छी तरह जानते थे कि अमरीकी लोग अुनके वारेमें किस तरहका रस और कुतूहल रखते हैं। अिसलिअे युवतीकी बात सुनकर अुनकी आंखें थोड़ी चमकी। अुन्होंने कहा: "अमेरिकाके लोग मुझे देखनेके लिअे अधीर जरूर होंगे, लेकिन मेरे मार्गदर्शक अमरीकी मित्र मुझसे कहते हैं कि वहां मुझे प्राणी-सग्रहालयमें रख दिया जायगा।"

युवतीकी 'नहीं, नही' की आवाजके साथ आसपास बैठे हुअे लोग सब हस पडे।

५. 'साठी बुद्धि नाठी'[1]

गाधीजी आगाखा महलमें नजरबन्द थे, अुन दिनो अेक बार अुन्होने वाअिसरॉयको अेक पत्र लिखा था। वह पत्र पढ़कर श्रीमती सरोजिनी नायडूने कहा कि "बापूको यह पत्र नही लिखना चाहिये। अिसके पहले लिखा गया पत्र सम्पूर्ण था। बापू अितने महान हैं कि अुन्हे अंग्रेज अधिकारियोंको बार-बार पत्र नहीं लिखना चाहिये। अुन्हें शान्तिसे बैठे रहना चाहिये। अन्तमें अंग्रेजोंको बापूके पास आना ही पड़ेगा।"

परन्तु सरोजिनी नायडूकी अिस राय पर गाधीजीने ध्यान नही दिया। दूसरे दिन पत्र रवाना करनेसे पहले गांधीजी दुबारा अुस पत्रको पढ़ गये। अुस समय सरोजिनी नायडूकी बात अुन्हें सही मालूम हुअी। और अुन्होने पत्र भेजनेका विचार छोड़ दिया। अुसी समय सरोजिनीदेवी वहासे गुजर रही थी। अुन्हें बुलाकर गाधीजीने कहा: "अम्माजान,[2] मुझे आपके सामने यह कबूल करना चाहिये कि कल आपने वाअिसरॉयको लिखे मेरे पत्रके विषयमें अपनी राय बताओ,

१. गुजरातीकी अिस कहावतका अर्थ है — ६० बरसकी अुमर हो जाने पर बुद्धि भाग जाती है, यानी बुढ़ापेमें बुद्धि सठिया जाती है।

२. गाधीजी मजाकमें सरोजिनी नायडूको अम्माजान कहते थे।

तब मैंने अुसे बहुत महत्त्व नहीं दिया था। मैंने घमडमें यह सोचा कि अम्माजान तो बूढी हो गअी है।"

सरोजिनी नायडू (बीचमें बोल अुठीं): "हा, जवानीके घमडमें सोचा होगा!"

गाधीजीने हसते हसते अपनी बात जारी रखी. "वह पत्र-व्यवहार पढ़नेके बाद मैं आपकी दलीलका महत्त्व समझा और मैंने स्वय ही यह विचार किया कि अम्माजान जवान होती जा रही है! और हम खुद बूढे होने लगे हैं। असलिअे हमारे बारेमें 'साठी बुद्धि नाठी' कहावत सच्ची साबित हो रही है। अब वह पत्र नहीं जायगा।"

६. सभी महात्मा बनने चले हैं!

रसोअीघरके बरतन साफ करते समय या ग्राम-सफाअी करते समय सेवाग्रामके आश्रमवासी छोटी बाहका कुर्ता और जाघिया पहन लेते थे। वह पोशाक देखकर अेक विदेशी महिला श्री मेरी चेजलीने गाधीजीसे कहा: "यह पोशाक मुझे बहुत नापसन्द है।"

गाधीजी. "अिस पोशाकने क्या गुनाह किया है?"

चेजली. "यह अंग्रेजी पोशाक है।"

गाधीजी: "लेकिन अंग्रेजी होनेसे क्या हो गया? अंग्रेजी पोशाकमें कोअी अच्छाअी हो तो मैं अुसे जरूर पहनू, भले ही अंग्रेजोंको हिन्दुस्तानी पोशाकसे नफरत हो।"

चेजली: "मेरा अिससे अुलटा मत है। हिन्दुस्तानी पोशाक जितनी कलामय है कि अुसके साथ विदेशी पोशाकको मिला देनेसे अुसकी कला नष्ट हो जाती है। कहां आपके झूलते ढीले कुर्ते और कहां अंग्रेजी ढगके छोटे जाघिये?"

गाधीजी: "तब तो अगर मैं अपने आश्रमवासियोंको सोला हैट पहननेकी सलाह दू, तो आप घबरा ही जायगी?"

पास बैठी हुआी मीराबहन बोलीं: "मुझे अन्दर जाकर
लगेंगे। मुझे तो यह हैट कभी भी अच्छी नहीं लगी।"

गांधीजी: "अिससे मालूम होता है कि तुम जो हैट पहनतं
यह तुम्हारे सिरके लिअे अनुकूल नहीं थी।"

मीराबहन: "नहीं, नहीं; मेरे पास अुस समय अच्छीसे अ
हैटें थीं। परन्तु अुन अूंची टोपियोंसे मेरा सिर हमेशा दुखने ल
था।"

गांधीजी: "तब मुझे कहना चाहिये कि तुम्हारा सिर बे
होगा। यह टोपी धूपमें काम करनेवालोंके लिअे बहुत ही अच्छी है

मीराबहन. "मैं नहीं मानती। हैटके बजाय मैं पगड़ी पह
ज्यादा पसन्द करूंगी।"

गांधीजी: "मेरा विश्वास है कि लल्लुभाअी शामलदास
पगड़ी पहनते हैं वह धूपसे तो हमारी रक्षा कर ही नहीं सकती।

अिस तरह चर्चा चल रही थी, अितनेमें मेरी चंचली बोल अु
"लेकिन मुझे हिन्दुस्तानी और अंग्रेजी पोशाककी यह खिचड़ी प
नहीं है। देखिये न यह आपकी कछनी कितनी सुन्दर है! ये भाअी ब
कछनी क्यों न पहनें? मेरा कहना यह है कि या तो वे सारी पोश
शुद्ध अंग्रेजी ही पहनें या शुद्ध हिन्दुस्तानी ही पहनें।"

गांधीजी: "परन्तु शुद्ध अंग्रेज बननेका अर्थ है साहब बनन
तब तो शराबकी दुकान पर भी जाना चाहिये न?"

सब कोअी जोरसे हंस पड़े।

गांधीजी: "मेरी कछनी तो सुन्दर है ही। अिसमें शंका नहं
लेकिन बात यह है कि ये बेचारे मेरे जैसी कछनी पहनने जायं
अुनकी शामत ही आ जाय। लोग अुनके बारेमें कहने लगें कि ये स
महात्मा बनने चले हैं!"

७. मोचियोंको प्रत्यक्ष पाठ

दक्षिण अफ्रीकाके जेलोंमें तथा टॉल्स्टॉय फार्ममें गांधीजीने जूते और चप्पल बनानेकी अच्छी तालीम ली थी। अेक दिन गांधीजीको पता चला कि वर्धाके सत्याग्रह आश्रमसे सम्बन्धित चर्मालयके मोची अच्छे चप्पल नहीं बना सकते। अिसलिअे चप्पल बनानेका प्रत्यक्ष पाठ सिखानेके लिअे अुन्हें गांधीजीने मगनवाड़ीमें बुलाया।

मोची भाअी अपने औजार और चमड़ेके टुकड़े लेकर गांधीजीके आसपास बैठे थे। अितनेमें सरदार वल्लभभाअी, राजेन्द्रबाबू, कांग्रेसके मंत्री तथा कार्यकारिणीके सब सदस्य आ पहुंचे और मोचियोंके आसपास खड़े रहकर यह नया नाटक देखने लगे।

"यह पट्टी अिस तरह आड़ी लगानी चाहिये। और टांके अिस जगह लगाने चाहिये।" — गांधीजी मोचियोंको समझा रहे थे।

हमें दिया हुआ समय मोची लोग ले रहे हैं, यह देखकर सब सदस्य अधीर होने लगे। अुनकी अधीरताको ताड़कर गांधीजी बोले :

"बेचारे छठे-चौमासे तो आते हैं। अुन्हें अितना-सा समय दूं, अिसमें भी आपको अुनसे अीर्ष्या होती है? अच्छे चप्पल कैसे बनते हैं, यह आपको देखना हो तो देखिये।"

अपने चारों ओर बड़े बड़े नेताओंको खड़ा देखकर मोची बेचारे घबरा गये और अेकके बाद अेक अुठकर बाहर चले गये। अब वे बाहर बैठकर अपना काम करने लगे। लेकिन अुनकी ठोकठाककी आवाज तो होती ही रहती थी!

"अितनी गंभीर चर्चा चल रही है, तब यह क्या ठोकठाक लगा रखी है?" नेताओंमें असंतोष फैला। किसीने यह आवाज बन्द करानेको कहा और पासमें बैठे हुअे अेक आश्रमवासी मोचियोंसे कहनेके लिअे अुठे। अुन्हें रोककर गांधीजी बोले :

"अरे, मोची जिस जगह काम करते हों, अुसके पास बैठकर भी हमें अपना काम करनेकी आदत डालनी चाहिये। और फिर यह ग्रामोद्योग-संघका कार्यालय है, अिसका पता अिन लोगोंको कैसे चलेगा?"

पास बैठी हुअी मीराबहन बोलीं: "मुझे जरूर चक्कर आने लगेंगे। मुझे तो यह हैट कभी भी अच्छी नहीं लगी।"

गांधीजी: "अिससे मालूम होता है कि तुम जो हैट पहनती थी वह तुम्हारे सिरके लिअे अनुकूल नहीं थी।"

मीराबहन: "नहीं, नहीं; मेरे पास अुस समय अच्छीसे अच्छी हैटें थी। परन्तु अुन अूची टोपियोंसे मेरा सिर हमेशा दुखने लगता था।"

गांधीजी: "तब मुझे कहना चाहिये कि तुम्हारा सिर बेडौल होगा। यह टोपी धूपमें काम करनेवालोंके लिअे बहुत ही अच्छी है।"

मीराबहन: "मैं नहीं मानती। हैटके बजाय मैं पगड़ी पहनना ज्यादा पसन्द करूंगी।"

गांधीजी: "मेरा विश्वास है कि लल्लुभाअी शामलदास जो पगड़ी पहनते हैं वह धूपसे तो हमारी रक्षा कर ही नहीं सकती।"

अिस तरह चर्चा चल रही थी, अितनेमें मेरी चेजली बोल अुठी: "लेकिन मुझे हिन्दुस्तानी और अंग्रेजी पोशाककी यह खिचड़ी पसन्द नहीं है। देखिये न यह आपकी कछनी कितनी सुन्दर है! ये भाअी अैसी कछनी क्यों न पहनें? मेरा कहना यह है कि या तो वे सारी पोशाक शुद्ध अंग्रेजी ही पहनें या शुद्ध हिन्दुस्तानी ही पहनें।"

गांधीजी: "परन्तु शुद्ध अंग्रेज बननेका अर्थ है साहब बनना। तब तो शराबकी दुकान पर भी जाना चाहिये न?"

सब कोअी जोरसे हंस पड़े।

गांधीजी: "मेरी कछनी तो सुन्दर है ही। अिसमें शंका नहीं। लेकिन बात यह है कि वे बेचारे मेरे जैसी कछनी पहनने जायं तो अुनकी शामत ही आ जाय। लोग अुनके बारेमें कहने लगें कि ये सभी महात्मा बनने चले हैं!"

पास पहुचा। अुसने प्रश्न किया : "बापूजी, काग्रेस पद-ग्रहण करेगी या नहीं ?"

देशके अेक अत्यन्त विवादास्पद प्रश्न पर गाधीजीकी राय मागी गअी थी। अिस प्रश्न पर वे जो भी कहते, अुसे देश-विदेशमे बहुत बडी प्रसिद्धि मिल सकती थी। और अिस प्रश्न पर वे मौन धारण करते, तो अुसका भी अेक विशेष अर्थ लगाया जा सकता था।

अिस परिस्थितिसे बचनेके लिअे गाधीजीने तुरन्त अपनी ओरसे प्रश्न किया : "क्यो, तुम्हे मत्री बनना है ?"

गाधीजीका अैसा अनसोचा प्रश्न सुनकर पत्रकार परेशानीमे पड गया। अिससे आसपास खडे लोग हस पडे। पत्रकार झेपकर भीड़में अदृश्य हो गया।

१०. आपके धन्धेका क्या होगा ?

गोलमेज परिषदके दिनोंमें गाधीजी लन्दनमे रहते थे। अुस अर्सेमे अेक बिशप अुनसे मिलने आये। और वे 'विज्ञान और यत्र' विषय पर गाधीजीसे चर्चा करने लगे।

बिशप अैसा मानते थे कि यत्रोसे मनुष्य-जातिकी बहुत सेवा होती है। अपनी यह श्रद्धा प्रकट करते हुअे अुन्होने कहा कि मनुष्यको शारीरिक श्रमके बोझसे छुडाना चाहिये, ताकि वह अधिक समय अपने बौद्धिक विकासमें तथा सास्कृतिक कार्योमें लगा सके।

गाधीजी : "सामान्य मनुष्य अपनी फुरसतका सारा समय अच्छे कार्योमें बितायेगा अैसा मुझे विश्वास नही होता। 'खाली दिमाग शैतानका घर' यह कहावत सचमुच बड़ी अच्छी है।"

बिशप : "मै रोज अेक घटेसे ज्यादा शरीर-श्रम नही करता। अपना बाकी समय मै बौद्धिक कार्योमें लगाता हू।"

गांधीजी (हसते हसते) : "लेकिन अगर सभी मनुष्य बिशप बन जाय, तो आपके बिशपके धन्धेका क्या होगा।"

८. जापानी स्त्री

जापानके अेक प्रख्यात कवि योन नोगुची भारतकी मुलाकात आये थे। भारतमें आकर यदि महात्मा गांधीसे न मिलते, तो अुनकी मुलाकात अधूरी ही मानी जाती! अिसलिअे वे गांधीजीसे मिलने सेवाग्राम आये। अुस समय गांधीजीकी तबीयत अच्छी नहीं थी। वे लेटे थे और अुनके कपाल पर मिट्टीकी पट्टी रखी हुआी थी।

कविका स्वागत करते हुअे गांधीजी बोले: "मैं भारतवर्षकी मिट्टीसे पैदा हुआ हूं, अिसलिअे भारतवर्षकी मिट्टी मेरे सिर पर मुकुटकी तरह विराज रही है!"

कविने अुनकी तबीयतके बारेमें पूछा। फिर दूसरी चर्चामें लग गये। चर्चाके दौरानमें कस्तूरबा किसी कामसे गांधीजीके पास आओीं। गांधीजीने कविसे अुनकी पहचान कराअी।

बादमें गांधीजीने हंसते-हंसते कविसे पूछा: "कस्तूरबा हूबहू जापानी स्त्री हो, अैसा आपको नहीं लगता?"

सुननेवाले हंसीको रोक नहीं सके। लेकिन जापानी कवि बोले: "हां, मेरी मा जैसी ही लगती है!"

९. तुम्हें मंत्री बनना है?

सन् १९३७ के चुनावमें कांग्रेसने पहली ही बार भाग लिया और वह धारासभाओंमें बहुमतमें आओी। परन्तु पद-ग्रहण किये जाय या नहीं, अिस प्रश्न पर बड़ा गतिरोध खड़ा हो गया। कांग्रेसमें भी अिस प्रश्नको लेकर दो दल बन गये।

अुस अर्सेमें गांधीजी मद्रास जा रहे थे। हर स्टेशन पर लोगोंकी भारी भीड़ अुनके दर्शनोंके लिअे अिकट्ठी होती थी। पत्रकार भी अुसमें होते ही थे। बेजवाड़ा स्टेशन पर गाड़ी पहुंची, तब बड़ी कठि-नाअीसे भीड़में से अपना रास्ता बनाता हुआ अेक पत्रकार गांधीजीके

या नहीं ?

देशके अेक अत्यन्त विवादास्पद प्रश्न पर गांधीजीकी राय मांगी गअी थी। अिस प्रश्न पर वे जो भी कहते, अुसे देश-विदेशमें बहुत बड़ी प्रसिद्धि मिल सकती थी। और अिस प्रश्न पर वे मौन धारण करते, तो अुसका भी अेक विशेष अर्थ लगाया जा सकता था।

अिस परिस्थितिसे बचनेके लिअे गांधीजीने तुरन्त अपनी ओरसे प्रश्न किया, "क्यों, तुम्हें मंत्री बनना है?"

गांधीजीका अैसा अनसोचा प्रश्न सुनकर पत्रकार परेशानीमें पड़ गया। अिससे आसपास खड़े लोग हंस पड़े। पत्रकार झेंपकर भीड़में अदृश्य हो गया।

१०. आपके धन्धेका क्या होगा?

गोलमेज परिषदके दिनोंमें गांधीजी लन्दनमें रहते थे। अुस अर्सेमें अेक बिशप अुनसे मिलने आये। और वे 'विज्ञान और यंत्र' विषय पर गांधीजीसे चर्चा करने लगे।

बिशप अैसा मानते थे कि यंत्रोंसे मनुष्य-जातिकी बहुत सेवा होती है। अपनी यह श्रद्धा प्रकट करते हुअे अुन्होंने कहा कि मनुष्यको शारीरिक श्रमके बोझसे छुड़ाना चाहिये, ताकि वह अधिक समय अपने बौद्धिक विकासमें तथा सांस्कृतिक कार्योंमें लगा सके।

गांधीजी: "सामान्य मनुष्य अपनी फुरसतका सारा समय अच्छे कार्योंमें बितायेगा अैसा मुझे विश्वास नहीं होता। 'खाली दिमाग शैतानका घर' यह कहावत सचमुच बड़ी अच्छी है।"

बिशप: "मैं रोज अेक घंटेसे ज्यादा शरीर-श्रम नहीं करता। अपना बाकी समय मैं बौद्धिक कार्योंमें लगाता हूं।"

गांधीजी (हंसते हंसते): "लेकिन अगर सभी मनुष्य बिशप बन जायं, तो आपके बिशपके धन्धेका क्या होगा।"

११. अैसी धोती तो स्त्रियां पहनती हैं

दीनबन्धु अेण्ड्रूज और गाधीजीके बीच गाढ मित्रता थी। गाधीजीके सम्पर्कमें आकर दीनबन्धु खादी भी पहनने लगे थे। अेक बार वे सेवाग्राममें गाधीजीसे मिलने आये। अुस समय अुन्होंने लंबी कफनी और काले रंगकी चौड़ी किनारवाली धोती पहनी थी। मोटरसे अुनके अुतरते ही सबकी नजर अुनकी धोतीकी ओर गअी। अैसा लगता था कि अुन्होंने किसी स्त्रीकी साड़ीका अुपयोग धोतीकी तरह किया है। अिसलिअे अेक आश्रमवासीने गांधीजीका ध्यान खींचते हुअे पूछा कि स्त्रियांके पहननेकी धोती दीनबन्धुने क्यों पसन्द की होगी? यह बात चल रही थी, अुसी बीच दीनबन्धु गाधीजीके पास आ पहुंचे। अुनकी धोती देखकर गाधीजीको भी बड़ा मजा आया। अुनका स्वागत करते हुअ गाधीजी बोले·

"अरे चार्ली, अैसी पोशाक आपने क्यों पहनी?"

दीनबन्धु: "क्यों, क्या हुआ?"

गाधीजी. "होगा क्या? ये रामनारायण कहते हैं कि अैसी धोती तो स्त्रियां पहनती हैं।"

गाधीजीके विनोदका रसिक अुत्तर देते हुअे दीनबन्धु बोले. "मुझे भी तो अपने मोहनके पास आना था न?"

सेवाग्रामकी गाधीजीकी कुटियामें दोनों वृद्धोंके अट्टहास्यसे प्रसन्नताका वातावरण छा गया।

१३. लाड़ले पुत्र

अेक बार कुछ हरिजनोंने सेवाग्राममें गांधीजीके खिलाफ अुपवास करके सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। हरिजन सत्याग्रही गांधीजीके पास आये और अुन्होंने सत्याग्रह करनेकी अपनी अिच्छा जाहिर की।

गांधीजीने अुनसे कहा: "तुम्हारे रहनेकी सारी सुविधा मैं आश्रममें कर देता हूं। तुम चाहो तो मैं अपनी कुटिया खाली कर दूं।"

हरिजन: "नहीं, नहीं, हम अैसा नहीं चाहते।"

गांधीजी: "तो तुम्हें पसन्द पड़े वह मकान तुम ले लो।"

हरिजनोंने बाकी कुटिया पसन्द की। अिसलिअे बाको बुलाकर गांधीजीने कहा: "बा, तुम्हारी कुटिया अिन लोगोंको दे दो।"

बा: "लेकिन फिर मैं कहां रहूंगी?"

गांधीजी: "तुम्हें कहां ज्यादा जगह चाहिये? थोड़ी जगह जो खाली रह जाय अुसीसे काम चला लेना। मैंने भी अपनी कुटिया खाली कर देनेकी अिच्छा अिन्हें बताओ थी।"

बा (हसकर) "लेकिन आपके तो ये लाडले पुत्र हैं।"

गांधीजी (अट्टहास्यके साथ): "हां, हां, लेकिन मेरे पुत्र तुम्हारे भी पुत्र हुअे न?"

बाने हसते-हसते हरिजन भाअियोंके लिअे जगह खाली कर देनेकी बात मान ली। परन्तु गांधीजीके अैसे प्रेमभरे वचन सुनकर हरिजन सत्याग्रहियोंका आधा जोश अुतर गया।

१४. पूंजीपतिसे

राष्ट्रके व्यापार-रोजगार और अुद्योगोंमें अग्रगण्य स्थान रखनेवाले अनेक पूंजीपति गांधीजीसे बहुत बार मिलने आते थे। वे राजनीति, अर्थशास्त्र आदि अनेक विषयों पर गांधीजीके साथ चर्चा करते थे। अुनमें से कुछका तो गांधीजीके साथ बड़ा मीठा सम्बन्ध था। अैसे अेक पूंजीपति गांधीजीसे अेक बार मिलने आये, तब वे चरखा चला

रहे थे। कातते कातते ही अुन्होंने अिन भाअीके साथ बातें की। अन्तमें पूंजीपतिने गाधीजीसे पूछा :

"बापू, आपको चुनाव करना पडे तो आप मुझे पसन्द करेंगे या मेरे धनको ?"

गाधीजी : "बेशक आपको ही।"

पूंजीपति : "लेकिन यदि मैं अपना व्यापार-धन्धा छोडकर आपके पास आअू, तो आप मुझे कौनसा काम देंगे ?"

गाधीजी (चरखेकी ओर अिशारा करके) . "यह चरखा ही दूगा।"

१५. मेरे सिर पर भी सींग निकल आये !

आहारके बारेमें अनेक प्रकारके प्रयोग करनेमें गाधीजीकी बड़ी दिलचस्पी थी। और दूसरा कोअी अैसे प्रयोग करता, तो अुनका नतीजा जाननेके लिअे भी वे बहुत अुत्सुक रहते थे।

अेक बार गांधीजीको पता चला कि मद्रास प्रान्तमें अेक भाअी बरसोंसे कच्चा अन्न खानेका प्रयोग करते हैं। अिसलिअे गाधीजीने अुन भाअीके प्रयोगों और अनुभवके बारेमें जाननेके लिअे अुन्हें आश्रममें बुलाया।

गाधीजी चुपचाप अुनकी बातें सुन रहे थे। अुन भाअीने कच्चे अन्नकी आहारके रूपमें बहुत तारीफ की और दूधको त्याज्य बताया। वे यहा तक कह गये कि दूध लेनेसे मनुष्यकी बुद्धि भी पशुओंके जैसी ही हो जाती है।

दलीलकी गाडीको पटरी परसे फिसलते देखकर गाधीजीने अपने हाथकी अंगुलियोंको सिर पर रख कर सींग बनाये और कहा

"अरे, देखिये, देखिये, मेरे सिर पर भी सींग निकल आये हैं !"

बकरीका दूध गाधीजीकी खास खुराक था। अिसलिअे सुननेवाले हंस पडे और अुन भाअीने भी अपना विचार-दोष देखकर आगे दलील करना बन्द कर दिया।

१८. कन्या क्या भाग गअी ?

अेक बार गांधीजी शांतिनिकेतन गये थे। अुस समय गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टागोरने अुनके स्वागतके लिअे भव्य तैयारी की थी। शांतिनिकेतन कलाका परम धाम ठहरा। स्वागतकी सारी रचनामें शांतिनिकेतनकी कलाका दर्शन होता था। गांधीजीके रहनेके लिअे जो कमरा चुना गया था, अुसे नाना प्रकारके पुष्पों और कलामय वस्तुओं द्वारा सुन्दर ढंगसे सजाया गया था। गांधीजीको तो अैसी सजावटकी कल्पना भी नहीं थी। अुनके लिअे आश्रमके ढंगका अेक सादा कमरा काफी था। जब गुरुदेव टागोर गांधीजीको अुस कमरेमें ले गये तब प्रवेश करते ही यह सारी कलामय सजावट देखकर गांधीजी हंस पड़े।

वे बोले "यह सब क्या है? कन्याके मंडपमें आप मुझे कहां ले आये हैं?"

गुरुदेव भी विनोदमें शरीक हो गये। अुन्होंने कहा "आप कविके धाममें पधारे हैं, यह आपको याद रखना चाहिये।"

लेकिन गांधीजी विनोदमें पीछे रहनेवाले नहीं थे। अुन्होंने पूछा "अच्छा तो कन्या कहां है?"

स्वागतमें हाजिर रहनेवाली बहनें मुसकुरा रही थीं। लेकिन गुरुदेवने अुत्तर दिया "हमारे हृदयकी सदा तारुण्यवती रानी — शांतिनिकेतन — आपका स्वागत करती है।"

अिस अुत्तरसे गांधीजी अधिक खिल अुठे "मेरे जैसे गरीब बूढ़े और पोपले आदमीको अेक बार देखनेके बाद दुबारा वह शायद ही देखेगी।"

"नहीं, नहीं," टागोर बोल अुठे, "हमारी रानी तो सत्यकी पुजारिन है और अितने वर्षोंसे वह निरन्तर सत्यकी ही पूजा करती आअी है।"

गांधीजी · "अैसी बात है! तब तो मेरे जैसे बूढ़े और पोपले आदमीके लिअे भी यहां स्थान है।"

१६. मेरे कान अितने लंबे हैं?

फ्रान्सके अेक वहुत प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट (व्यंगचित्र बनानेवाले कलाकार) भारत आये थे। दिल्लीमें गाधीजीसे मिलनेके बाद चित्रकारने अुनका अेक सुन्दर व्यंगचित्र बनाया।

पेरिस विश्वविद्यालयके अेक प्रोफेसरने वह चित्र गांधीजीको भेंट किया। कार्टूनिस्टकी कला देखकर गाधीजीको बड़ा आनन्द हुआ। खूब ध्यानसे अुस चित्रको देखनेके बाद आश्चर्य प्रकट करते हुअे गाधीजी बोले:

"चित्र तो अच्छा है, लेकिन मेरे कान अितने लम्बे क्यों बनाये है?"

प्रोफेसर. "क्योंकि आपके कान अितने लम्बे ही हैं।"

गाधीजी (हंसकर): "मैं तो कभी शीशेमें अपना चेहरा देखता नही। अिसलिअे मुझे पता नही कि मेरे कान अितने लम्बे हैं!"

१७. अरे यह कौन है?

देश-विदेशके अनेक कार्टूनिस्टोंने गांधीजीके व्यंगचित्र बनाये हैं। अैसा ही अेक व्यंगचित्र बनाकर अेक कलाकार अुस पर गाधीजीके दस्तखत लेने आये। अपना अनोखा व्यंगचित्र देखकर गाधीजीने अुस पर लिखा:

"अरे! यह कौन है?"

अिस अेक ही वाक्यमें गांधीजीको अुनकी कलाके बारेमें क्या कहना है, यह कलाकार मित्र समझ गये। और आसपास खड़े सब लोग हंसने लगे।

१८. कन्या क्या भाग गओ ?

अेक बार गाधीजी शातिनिकेतन गये थे। अुस समय गुरुदेव रवीन्द्र-नाथ टागोरने अुनके स्वागतके लिअे भव्य तैयारी की थी। शाति-निकेतन कलाका परम धाम ठहरा। स्वागतकी सारी रचनामें शाति-निकेतनकी कलाका दर्शन होता था। गाधीजीके रहनेके लिअे जो कमरा चुना गया था, अुसे नाना प्रकारके पुष्पों और कलामय वस्तुओं द्वारा सुन्दर ढगसे सजाया गया था। गाधीजीको तो अैसी सजावटकी कल्पना भी नही थी। अुनके लिअे आश्रमके ढगका अेक सादा कमरा काफी था। जब गुरुदेव टागोर गाधीजीको अुस कमरेमें ले गये तब प्रवेश करते ही यह सारी कलामय सजावट देखकर गाधीजी हस पडे।

वे बोले . "यह सब क्या है ? कन्याके मडपमें आप मुझे कहा ले आये हैं ?"

गुरुदेव भी विनोदमें शरीक हो गये। अुन्होंने कहा "आप कविके धाममें पधारे हैं, यह आपको याद रखना चाहिये।"

लेकिन गाधीजी विनोदमें पीछे रहनेवाले नही थे। अुन्होंने पूछा · "अच्छा तो कन्या कहा है ?"

स्वागतमें हाजिर रहनेवाली बहनें मुसकुरा रही थी। लेकिन गुरुदेवने अुत्तर दिया "हमारे हृदयकी सदा तारुण्यवती रानी — शाति-निकेतन — आपका स्वागत करती है।"

अिस अुत्तरसे गाधीजी अधिक खिल अुठे "मेरे जैसे गरीब बूढे और पोपले आदमीको अेक बार देखनेके बाद दुबारा वह शायद ही देखेगी।"

"नही, नही," टागोर बोल अुठे, "हमारी रानी तो सत्यकी पुजारिन है और अितने वर्षोंसे वह निरन्तर सत्यकी ही पूजा करती आओ है।"

गाधीजी · "अैसी बात है! तब तो मेरे जैसे बूढे और पोपले आदमीके लिअे भी यहा स्थान है।"

अिस तरहके विनोदपूर्ण वार्तालापके बाद गुरुदेवने गांधीजीसे बिदा ली। गांधीजीने सजावटकी कुछ चीजें हटाकर अेक कोनेमें रखवा दीं। और अुस जगह चरखा तथा दूसरी जरूरी चीजें आ गअीं। बिस्तर भी गांधीजीने कमरेसे बाहर निकलवाया और हमेशाकी तरह वे खुले आकाशकी छत्रछायामें सोये।

दूसरे दिन कविवर टागोर गांधीजीसे मिलने आये। कमरेकी बदली हुअी हालतको देखकर अुन्होंने विनोदकी धारा बहाअी: "अरे भगवान, कन्याका मंडप तो कहीं दीखता ही नहीं। वर तो बैठे है, लेकिन कन्या वेचारी क्या भाग गअी?"

गांधीजी (गुरुदेवके स्वागतमें खड़े होकर): "मैंने तो पहले ही आपको चेतावनी दे दी थी कि कन्या अिस पोपले बूढ़ेकी परवाह नहीं करेगी।"

दोनों वृद्ध महापुरुषोंके अट्टहास्यसे शांतिनिकेतन गूंज अुठा।

१९. शराबियोंके लिअे दया

गांधीजीने रचनात्मक कार्यक्रममें शराबबन्दीको महत्त्वका स्थान दिया था। शराब और ताड़ीकी दुकानें बन्द करानेके लिअे पिकेटिंगका कार्यक्रम भी चलाया था। वे कहते थे: "मुझे कुछ घड़ीके लिअे भी हिन्दुस्तानका राजा बना दिया जाय, तो मैं पहला कानून शराब-बन्दीका बनाअूं।" यह वाक्य भारतकी जनताको शराबके विनाशसे बचानेकी गांधीजीकी अधीरताको बताता है।

परन्तु विदेशोंमें शराब पीनेको सभ्यता माना जाता है। वहांके लोग शायद गांधीजीके शराब बन्द करनेके कड़े रुखको तथा अुनके शराबबन्दीके आन्दोलनको समझ न सके। गोलमेज परिषदके समय गांधीजी ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय देखने गये, तब अेक विद्यार्थीने अुनसे पूछा: "शराब पीनेवालोंके प्रति आप अितने निर्दय क्यों बनते हैं?"

गांधीजी : "जो लोग शराबके व्यसनके शिकार हो गये हैं, अुनके प्रति मेरे मनमें दया होनेके कारण।"

अैसा छोटा और स्पष्ट किन्तु विनोदभरा अुत्तर सुनकर सारे विद्यार्थी खुश हो गये।

२०. आप कभी गुस्सा होते हैं?

गोलमेज परिषदमें हाजिर रहनेके लिअे गांधीजी अिंग्लैण्ड गये थे, तब अुन पर कामका अितना बोझ रहता था कि वे रातमें मुश्किलसे दो घंटे सो पाते थे। काममें डूबे रहने पर भी अुनके मुख परकी प्रसन्नता कभी कम न होती थी। अिससे बहुतेरे अंग्रेजोंको आश्चर्य होता था। अेक बार अेक अंग्रेज दम्पति अुनसे मिलने आये। जिज्ञासासे भरे सरल भावसे पत्नीने पूछा : "मि० गांधी, आप कभी गुस्सा होते हैं?"

गांधीजी : "मेरी पत्नीसे पूछिये। वह आपसे कहेगी कि सारी दुनियाके साथ मैं बहुत अच्छा बरताव करता हूं, केवल अुसीके साथ नहीं करता!"

स्त्री : "मेरे पति तो मेरे साथ बहुत अच्छा बरताव करते हैं।"

गांधीजी : "तब तो मैं मानता हूं कि आपने अपने पतिको भारी रिश्वत खिलाअी होगी!"

२१. यह समझदारी बादमें आअी

गांधीजी जिन दिनों दक्षिण भारतमें हरिजन-यात्रा कर रहे थे, अुन दिनोंकी यह बात है। अेक बहन अुन्हें गहनोंकी भेंट देनेके लिअे अपने घर बुलाकर ले गअी। वहांसे लौटते समय पड़ोसकी अेक दूसरी बहनने भी अपनी सोनेकी चूड़ियां गांधीजीके हाथमें रख दीं। अुस समय अुस बहनके पतिसे गांधीजीने पूछा :

"आप जानते हैं न कि आपकी पत्नीने अपनी सारी चूड़ियां मुझे दे दी हैं? अुन्होंने आपकी सम्मति ली है?"

पति : "जी हां, मेरी सम्मति ली है। परन्तु यह अुसकी मरजीकी बात है। चूड़ियां अुसकी हैं। अुसे रोकनेका मुझे अधिकार नहीं है।"

गांधीजी : "सब पति अितने समझदार नहीं होते। आपकी अुमर क्या है?"

पति : "३० बरसकी।"

गांधीजी : "आपकी अुमरमें मैं अितना समझदार नहीं था। यह समझदारी मुझे बादमें आअी।"

यह बात सुनकर सारी मंडली जोरसे हंस पड़ी।

२२. घड़ियां भले अलग पड़ें

गांधीजी समय-पालनके बहुत आग्रही थे। अिसलिअे अुनका जीवन घड़ीके कांटोंकी तरह नियमित गतिसे चलता था। अेक बार अेक कार्यकर्ताको अुन्होंने चार बजे मिलनेका समय दिया। वे भाअी गांधीजीके कुछ बुनियादी विचारोंसे विरुद्ध मत रखते थे। अिसलिअे गांधीजीके साथ वे लम्बी चर्चा करना चाहते थे।

कार्यकर्ताकी घड़ीमें ठीक चार बजे और अुन्होंने गांधीजीके कमरेमें पैर रखा। गांधीजीने अेक भाअीके साथ बातचीत पूरी की और अपनी घड़ीकी ओर नजर घुमाअी। अुसमें चारमें अभी आधा मिनट बाकी था।

"आप आधे मिनट जल्दी आये।" —हंसते हुअे गांधीजीने कार्यकर्तासे कहा।

"माफ कीजिये। मेरी घड़ीमें चार बज गये हैं।" कहकर कार्यकर्ताने गांधीजीके कमरेसे बाहर जानेके लिअे पैर अुठाया।

गांधीजी : "नहीं, नहीं, भीतर आअिये। हमारी घड़ियां भले अलग पड़ें, लेकिन हम न पड़ें।"

यह विनोदपूर्ण अुत्तर सुनकर वे भाअी अपनी हंसीको रोक

२३. मध्यम रहती है

अेक अमरीकी पत्रकार गांधीजीसे मिलने आये थे। अुन्होंने गांधीजीके साथ थोड़ी बातचीत करनेके बाद पूछा: "अब आपकी तबीयत कैसी रहती है?"

गांधीजी: "अिस पेन्सिलकी तरह — मध्यम।"

अैसा कहकर अुन्होंने अपने हाथकी पेन्सिल पर लिखा हुआ 'मिडलिंग' (मध्यम) शब्द अमरीकी पत्रकारको दिखाया।

२४. लग्न-जयंती

गांधीजी आगाखां महलमें कैद थे, अुस समय कस्तूरबा, प्यारेलालजी, डॉ० गिल्डर, सरोजिनी नायडू और सुशीला नय्यर अुनके साथ रहते थे। अेक दिन वहां डॉ० गिल्डरके नाम आमोंका पारसल आया। यह डॉक्टरके लग्नकी २९ वीं बरसगांठके अुपलक्ष्यमें भेजी गअी भेंट थी।

लग्नकी बात निकली, अिसलिअे सहज भावसे बाने गांधीजीसे पूछा: "हमारे लग्नको कितने बरस हुअे होंगे?"

गांधीजी (हंसकर) "बाको भी अपनी लग्न-जयंती मनानी है, अैसा लगता है!"

यह सुनकर सब लोग हंस पड़े।

२५. रसगुल्लोंका आनन्द

अेक बार गांधीजीकी मंडलीके भोजनकी व्यवस्था अेक गृहस्थको करनी थी। गांधीजी और अुनके साथियोंके लिअे अनुकूल भोजन तैयार हो गया। परन्तु अुसमें किसी मिठाअीका समावेश नहीं हुआ था। यह कमी यजमानको खटकती थी। अुन्होंने भोजनमें अेकाध मिठाअीकी बानगी परोसनेकी अपनी अिच्छा मंडलीके अेक सदस्यको बताअी। अुस सदस्यने कहा: "बापूको अैसी मिठाअी पसन्द नहीं है।"

अिस तरह बात चल रही थी, अितनेमें कस्तूरबा आ पहुंचीं। यजमानने बासे पूछा: "बा, आपके साथियोंको मैं रसगुल्ले परोसूं तो कोअी हर्ज है?"

बा मानती थी कि आश्रमवासियोंको कुछ स्वादिष्ठ चीज खानेको मिले तो अच्छा। अिसलिअे अुन्होंने कहा: "नहीं, कोअी हर्ज नहीं। आप अिन्हें रसगुल्ले जरूर खिलायें।"

जीमते समय रसगुल्ले परोसे जाते देखकर गांधीजी हंसकर बोले: "अरे, अरे, यह क्या आफत है?"

आश्रमवासी: "बाकी अिजाजतसे यह सब हो रहा है।"

गांधीजी: "बाकी अिजाजत ले लेनेके बाद मेरी भला क्या चलनेवाली है! बा अैसा ही करती है। आश्रमवासियोंको मीठा पकवान खिलानेमें अुसे बड़ा आनन्द आता है।"

गांधीजीके सिवा और सबने हंसते-हंसते रसगुल्ले खाये।

२६. ब्रिटिश शेरकी हालत

अेक बार गांधीजीने भारतकी जनताके सामने अैसा कार्यक्रम रखा, जिसका सच्चे दिलसे पालन करने पर अेक ही वर्षमें भारतको स्वराज्य मिल जाता। भारतमें अंग्रेजोंके मातहत निकलनेवाले अेक अखबारके प्रतिनिधिने परेशान होकर गांधीजीसे पूछा: "यदि अेक वर्षमें भारतको स्वराज्य मिल गया तो अंग्रेजोंका क्या होगा?"

गांधीजी: "शेर बकरीके साथ पड़ा रहेगा!"

गांधीजीका यह विनोद सुनकर पत्रकार आगे कोअी प्रश्न नहीं पूछ सका।

२७. दरिद्र-नारायणका प्रतिनिधि

दक्षिण भारतमें अेक भाओीने बरसों तक थोड़ा थोड़ा पैसा अिकट्ठा करके अेक मंदिर बनवाया। अुसमें अुन्होंने राम, लक्ष्मण और सीताकी मूर्तियोंकी स्थापना की और अुन मूर्तियोंको खादीके कपड़े पहनाये। अुस मंदिरमें हरिजन भी दर्शन करने जा सकते थे।

मंदिरकी अुद्घाटन-विधि स्थापकने गांधीजीके हाथों कराअी थी। गांधीजी जब रामकी मूर्तिके पास गये, तब मंदिरके स्थापकने गांधीजीको खादीकी भेंट दी। यह पवित्र दृश्य देखकर मंडलीके अेक सदस्य गांधीजीकी ओर देखकर बोले "लोग देवताके सामने भेंट धरते है, लेकिन आपके सामने देवताको भेंट धरनी चाहिये, क्यों?"

स्थापक "भगवानको दासोंका दास अिसीलिअे न कहा गया है? गांधीजी जैसे दासका वह दास है।"

गांधीजी (हसते हसते) "मुझे अीश्वर दरिद्र-नारायणका सच्चा प्रतिनिधि मानता है। अिसलिअे अीश्वरको भी अुनके लिअे दान देना ही पड़ेगा!"

२८. शीशेकी क्या जरूरत?

कुछ अखबारोंके प्रतिनिधि बड़े कुशल और होशियार होते है। अैसे अेक चतुर प्रतिनिधिको यह मालूम था कि गांधीजी शीशेकी मददके बिना भी अपनी हजामत बना सकते है। वे अेक बार गांधीजीसे मिलने आये, तब गांधीजीको प्रसन्न मुद्रामें देखकर अुन्होंने पूछा: "आप शीशेमें अपना मुंह क्यों नहीं देखते?"

गांधीजी: "मुझसे मिलने आनेवाला हर आदमी मेरा मुंह देखता ही है। तब फिर मुझे शीशा रखनेकी क्या जरूरत है?"

'बड़े' शब्दका प्रयोग अुमरमें बड़ेके अर्थमें करके गांधीजी बोले : "नहीं, नहीं, बड़ी तो बा है। अिसीलिअे वह कहती है कि मैं बड़ी हूं।"

विद्यार्थिनियां खिलखिला अुठीं।

३१. बेकारीका अिलाज

अेक बार गांधीजी अिंग्लैण्डके विद्यार्थियोंके सामने भाषण करने गये थे। अपना भाषण समाप्त करनेके बाद अुन्होंने विद्यार्थियोंसे प्रश्न पूछनेको कहा। अिस पर तरह तरहके प्रश्न गांधीजीसे पूछे गये।

भारतकी परिस्थितिसे अनजान अेक विद्यार्थीने प्रश्न पूछा : "भारतके गांवोंमें बेकारी बहुत है, तो वहांके लोग शहरोंमें काम करने क्यों नहीं जाते?"

विद्यार्थीका अज्ञान देखकर गांधीजीने विनोदमें कहा "यह अिलाज तो आपके रॉयल कमीशनने भी नहीं बताया।"

३२. मिर्चका तीखापन

सूरतके पाटीदार आश्रममें गांधीजी पहले-पहल गये, तब आश्रममें जो सजावट की गअी थी अुसमें साग-भाजीका तोरण भी बांधा गया था। और अुस तोरणके बीच अेक बड़ी लाल मिर्च लटकाअी गअी थी।

आश्रममें प्रवेश करते ही गांधीजी बोले "मुझे यहां अैसा लगता है, मानो मैं अपने ही स्थानमें आया हूं।"

बादमें साग-भाजीके तोरणकी बात निकली, तब अेक भाअीने कहा . "बापूजी, अिस साग-भाजीकी मिठास तो आपमें है ही, परन्तु जिस प्रकार साग-भाजीमें मिर्चका तीखापन जरूरी है, अुसी प्रकार आपमें भी थोड़ा तीखापन होना जरूरी है।"

२९. यश मिलना कठिन है

अेक बार कुछ विदेशी यात्री गांधीजीसे पटनामें मिलने आये। अुन्होंने गाधीजीसे बातें कीं और अन्तमें अुनकी दिनचर्या भी जान ली। वे जब विदा हो रहे थे तब कुमारी मनुबहन गाधीका परिचय कराते हुअे गाधीजीने कहा :

"यह मेरी पोती है और हज्जाम भी है। यह साबुन लगाये बिना ही मेरी हजामत बना सकती है; और अुस समय मैं गहरी नीदमें सो जाता हूं।"

विदेशी यात्री खूब हंसे। और अुन्होंने 'कुशल हज्जाम' कहकर मनुबहनको बधाअी दी।

मनुबहन · "बापूजीकी बात सच है। लेकिन हज्जामका अर्थ हमारे यहा दूसरा भी होता है। जिस आदमीको कोअी काम करना नही आता, अुसे हिन्दुस्तानके लोग कहते हैं — तुम बिलकुल हज्जाम जैसे हो!"

गांधीजी : "देखिये यह लड़की क्या कहती है? अिस जमानेमें यश मिलना कठिन है!" (जोरकी हंसी)

३०. बड़ा कौन?

गाधी-जयन्तीका दिन था। वर्धाके महिलाश्रममें पढ़नेवाल विद्यार्थिनिया गाधीजीको प्रणाम करने आअी थीं। सायमें अपने काते हुअे सूतकी धोती गांधीजीको भेंट करनेके लिअे ला थीं।

भेंट देखकर गांधीजी बोले :

"अिस भेंटका अधिकारी मैं नही, बा है।"

विद्यार्थिनिया : "आप बड़े हैं, अिसलिअे आपको ही यह स्वीकार करनी चाहिये।"

'बड़े' शब्दका प्रयोग अुमरमें बड़के अर्थमें करके गांधीजी बोले : "नहीं, नहीं, बड़ी तो बा है। जिसीलिअे वह कहती है कि मैं बड़ी हूं।"

विद्यार्थिनियां खिलखिला अुठीं।

३१. बेकारीका अिलाज

अेक बार गांधीजी अिंग्लैण्डके विद्यार्थियोंके सामने भाषण करने गये थे। अपना भाषण समाप्त करनेके बाद अुन्होंने विद्यार्थियोंसे प्रश्न पूछनेको कहा। अिस पर तरह तरहके प्रश्न गांधीजीसे पूछे गये।

भारतकी परिस्थितिसे अनजान अेक विद्यार्थीने प्रश्न पूछा "भारतके गांवोंमें बेकारी बहुत है, तो वहांके लोग शहरोंमें काम करने क्यों नहीं जाते?"

विद्यार्थीका अज्ञान देखकर गांधीजीने विनोदमें कहा "यह *अिलाज तो आपके रॉयल कमीशनने भी नहीं बताया।*"

३२. मिर्चका तीखापन

सूरतके पाटीदार आश्रममें गांधीजी पहले-पहल गये, तब आश्रममें जो सजावट की गअी थी अुसमें साग-भाजीका तोरण भी बांधा गया था। और अुस तोरणके बीच अेक बड़ी लाल मिर्च लटकाअी गअी थी।

आश्रममें प्रवेश करते ही गांधीजी बोले "मुझे यहां अैसा लगता है, मानो मैं अपने ही स्थानमें आया हूं।"

बादमें साग-भाजीके तोरणकी बात निकली, तब अेक भाअीने कहा: "बापूजी, अिस साग-भाजीकी मिठास तो आपमें है ही, परन्तु जिस प्रकार साग-भाजीमें मिर्चका तीखापन जरूरी है, अुसी प्रकार आपमें भी थोड़ा तीखापन होना जरूरी है।"

गांधीजी (हंसकर) : "मुझमें मिर्च जैसा तीखापन है या अुससे ज्यादा है, अिसका पता तो आपको तभी चलेगा जब आप मेरा स्वाद चखेंगे।"

३३. भंगी जितने ही स्वतंत्र होंगे

अेक बार गांधीजी दिल्लीकी भंगी-कालोनीमें ठहरे थे। तब भारत स्वतंत्र नही हुआ था, परन्तु गांधीजी कहते थे कि स्वराज्य बहुत पास आ गया है। पूजीपतियों, जमीदारों और अुद्योगपतियोंको भी लगने लगा था कि स्वराज्य अब भारतके दरवाजे खटखटाने लगा है। जमीदारोको यह चिन्ता होने लगी थी कि आजाद भारतमें अेक वर्गके नाते अुनके अधिकारोकी रक्षा हो सकेगी या नही।

अिसलिअे अेक दिन जमीदारोके कुछ प्रतिनिधि अिस प्रश्नकी स्पष्टता करनेके लिअे भंगी-कालोनीमें गांधीजीसे मिलने आये। अुन्होने गाधीजीसे पूछा : "आजाद भारतमें हमारा स्थान कैसा होगा?"

जमीदार भी तो आखिर गुलाम ही थे न? अिसलिअे गाधीजीने कहा : "किसी भंगी जितने ही आप भी स्वतंत्र होंगे।"

अुनका सोचा हुआ अुत्तर तो अुन्हे नही मिला, परन्तु गाधीजीके अिस विनोदके कारण हास्यके वातावरणमें प्रतिनिधियोंने अपनी बात आगे बढ़ाअी।

३४. लकड़ीका अुपयोग

अेक बार श्री जवाहरलाल नेहरू अपने पिताजीके साथ गांधीजीसे मिलने आये। शामका वक्त था। गाधीजीके कमरेमें दीया जल रहा था। परन्तु जवाहरलालजी अन्दर आये, अुससे पहले ही वह बुझ गया और दरवाजेके पास रखी हुअी बापूकी लकड़ीसे वे टकरा गये। …से कुछ चिढ़कर जवाहरलालजीने पूछा : "बापू, आप तो अहिंसाके … हैं। तब आप यह लाठी क्यो रखते हैं?"

गाधीजी : "तुम्हारे जैसे अुधमी लड़कोंको सीधा करनेके लिअे।"

यह सुनकर जवाहरलालजीका गुस्सा अुतर गया और वे हस पड़े।

३५. स्वागत !

अेक दिन गाधीजी घूमने निकले अुस समय अेक पत्रकार अुनके पास पहुच गया। अुसने गाधीजीसे पूछा. "बापू, आप तो सन्त पुरुष है। अिसलिअे मरनेके बाद आपको स्वर्ग ही मिलेगा। क्यों ठीक है न?"

गाधीजी : "मरनेके बाद मुझे स्वर्ग मिलेगा या नरक, यह मै नहीं कह सकता। परन्तु अेक बात जरूर निश्चित रूपमें कह सकता हू। मै स्वर्गमें जाअू या नरकमें, परन्तु वहां मेरे स्वागतके लिअे पत्रकारोंका दल जरूर रहेगा।"

३६. खूनका दबाव कम करनेका अुपाय

अेक बार अेक होमियोपैथ डॉक्टर गाधीजीकी परीक्षा करने आये। रोगका निदान करनेसे पहले रोगीका अितिहास जाननेमें ये डॉक्टर बडी दिलचस्पी लेते थे। रोगीके परिवारमें कौनसा रोग प्रचलित है, अुसके माता-पिताकी मृत्यु किस कारणसे हुअी वगैरा जानकारी हासिल करनेके बाद ही वे अिलाज शुरू करते थे। अिसलिअे गाधीजीसे अुन्होंने पूछा· "आपके पिताजीकी मृत्यु किस तरह हुअी थी?"

गाधीजी·"वे गिर पडे थे और अुन्हे भगदरकी बीमारी थी। अुससे वे ६५ वर्षकी आयुमें मर गये थे।"

डॉक्टर "आपकी माताजीकी मृत्यु कैसे हुअी?"

गाधीजी : "वे विधवा हो गअी और विधवापनके दु:खसे मर गअी।"

सीधा हुआ अुत्तर न मिलनेसे डॉक्टर परेशान हुअे, लेकिन अुन्होंने सवाल पूछना जारी रखा· "आपकी स्मरण-शक्ति कैसी है?"

गाधीजी प्रसन्न मुद्रामें थे। बोले : "लेकिन गुजराती लडकियोंकी यह विशेषता है। पर देखिये, कही अुसके साथ भाग न जाअिये!"

यह वाक्य सुनकर डॉक्टर बेचारे घबरा गये। थोडी नाराजी बताते हुअे अुन्होंने कहा : "बापू, आप यह कैसी बात कहते हैं? मैं ६० वर्षका बूढा हो गया हू। अिस अुमरमें तो मैं किसी भी स्त्रीके साथ भाग नही सकता।"

लेकिन गाधीजी तो रग पर चढ गये थे। बोले "मैं ६० रससे ज्यादा अुमरवाले अेक आदमीको पहचानता हूं, जो अेक फ्रेंच डकीके साथ भाग गया था।"

अिस तरह लम्बे समय तक सबको हसानेके बाद जब शान्ति गअी, तब गाधीजी कहने लगे. "अिस तरह मैं अपना खूनका बाव कम करता हू।"

३७. राजा कॅन्यूट

फैजपुर कांग्रेसके अध्यक्षके रूपमें पडित जवाहरलालजीका चुनाव हो चुका था। अुसी अरसेमें सरदार वल्लभभाअी, जवाहरलालजी और राजेन्द्रबाबू अेक महत्त्वके प्रश्न पर गाधीजीसे चर्चा करनेके लिअे सेवाग्राम आये। परन्तु अुस समय गाधीजी दो बीमारोकी सेवामें तल्लीन थे। तीनों नेता यह दृश्य देख रहे थे। अुन्हे दिये हुअे समयमें से काफी समय बीत गया, तब सरदारने बापूको याद दिलाते हुअे कहा : "बापू, आपके पास समय न हो तो हम लोग जायें।"

अुन्हे रोकते हुअे गाधीजीने कहा "परन्तु अिन बीमारोकी सार-संभालका काम बडा कठिन हो गया है। पहले अिसे तो पूरा कर दू।"

राजनीतिक कार्य चाहे जितना महत्त्वका और जरूरी हो, फिर भी बापूको बीमारोकी सेवासे रोकना कितना मुश्किल है, यह बताते हुअे जवाहरलालजीने सरदारसे कहा. "लेकिन हमारी यह कोशिश

समुद्रकी लहरोंको रुकनेका आदेश देनेवाले राजा कैन्यूटके जैसी ही नहीं है?"

गाधीजी (जवाहरलालजी काग्रेसके चुने हुअे अध्यक्ष हैं अिसकी याद दिलाते हुअे): "अिसीलिअे तो हम लोगोंने आपको कैन्यूट राजा बनाया है।"

३८. दो बूढ़ोंका विनोद

१९३० में कविवर रवीन्द्रनाथ टागोर साबरमती आश्रममें गांधीजीसे मिलने आये थे। बातचीतके दौरानमें टागोर बोले: "महात्माजी, अब मेरी अुमर ७० बरसकी हो गअी है, अिसलिअे मैं आपसे बहुत बड़ा कहा जाअूगा न?"

गांधीजी (हसकर): "यह सच है। परन्तु ६० बरसका बूढ़ा नाच नहीं सकता, जब कि ७० बरसका जवान कवि नाच सकता है।"

टागोर: "यह भी सच है। आप फिर अेक 'अरेस्ट क्योर' की तैयारी करते मालूम होते हैं। मुझे भी सरकार अैसा आरामका मौका दे तो कितना अच्छा हो!"

गाधीजी: "आपका ढग ही अैसा नहीं है; तब सरकार बेचारी क्या करे?"

भारतके अिन दो महान पुरुषोंकी विनोदपूर्ण बातें सुननेवाले सब लोग हस रहे थे।

३९. जन्मदिनकी थैली

२ अक्तूबर, १९४७ के दिन गाधीजीको जन्म-दिवसके अुपलक्ष्यमें अेक थैली भेंट की जानेवाली थी। गाधीजीके पास रखी अी रुपयोकी थैलीकी ओर देखकर श्रीमती सरोजिनी नायडूने अुनसे कहा: "यह थैली मैं आपको न दू और लेकर भाग जाअू तो आप क्या करे?"

गाधीजी: "मैं जानता हू कि आप अैसा करनेकी शक्ति रखती है।"

पासमें बैठे हुअे सब लोग हस पडे।

४०. सेवा ही मेरा धर्म है

अेक अमरीकी पादरीने गाधीजीसे पूछा· "आपका धर्म क्या है? भारत भविष्यमें कौनसा धर्म स्वीकार करेगा?"

स्वतत्र भारतमें किस धर्मको स्थान मिलेगा, यह जाननेके लिअे पादरी बहुत आतुर था।

कमरेके दो बीमारोकी ओर अगुली दिखाकर गाधीजीने कहा· "सेवा करना ही मेरा धर्म है। भविष्यकी मैं चिन्ता नही करता।"

४१. पितृत्वकी होड़

१९३१ में गाधीजी अिग्लैंडमें किग्सली हॉलमें रहते थे। वहा कअी भाअी-बहन अुनके हस्ताक्षर लेने आते थे। अेक दिन अैसे मुलाकातियोमें नौकादलका अेक निवृत्त सैनिक भी आया। मीराबहनके पिता नौसेनामें अेडमिरल थे, तब अुनके हाथ नीचे वह काम करता था। वह गाधीजीका प्रशसक था। गाधीजीके पास आकर वह बोला: "मुझे हथियारोकी लडाअी पसन्द नहीं है। लेकिन आपकी लडाअी मुझे अच्छी लगती है। हथियारोकी लडाअीमें हिस्सा लेनेके बजाय अुसका विरोध करके जेल जाना मुझे ज्यादा पसन्द है।"

गाधीजीके हस्ताक्षर लेकर वह विदा हो रहा था, अुस समय अुन्होंने पूछा: "तुम्हारे कितने बच्चे हैं?"

सैनिक. "साहब, मेरे आठ बच्चे हैं। चार लड़के और चार लडकिया।"

गाधीजी: "मेरे भी चार लडके हैं, अिसलिअे आधे रास्ते तक मैं तुम्हारे साथ दौड़ सकता हू?"

ये शब्द सुनते ही सारा घर अट्टहास्यसे गूज अुठा।

४२. बिना चाबीका घर

१९३५ के भारत-कानूनके अनुसार देशमें चुनाव हो रहे थे, अुन दिनों अेक अग्रेज महिला सेवाग्राममें गांधीजीसे मिलने आअी थी। भारत-कानून और चुनावकी बात निकलने पर गाधीजीने कहा: "आप लोगोंने हमें घर तो दिया, लेकिन अुसकी चाबी अपने ही हाथमें रखी है।"

अिस विनोदभरे वाक्यमें गाधीजीने भारत-कानूनकी असफलताके बारेमें सब कुछ कह डाला है, अैसा समझकर वह महिला हसकर शान्त रही।

४३. पापका प्रायश्चित्त

आश्रममें पल-पुसकर बड़ी हुअी अेक लडकीकी सगाअीकी विधि बारडोली आश्रममें रखी गअी थी। वरको वहीं बुलाया गया था। सरदार पटेल, कैलनबैक, गाधीजी वगैराकी अुपस्थितिमें कस्तूरबाने वरको कुमकुमका तिलक लगाया और दूसरी विधि पूरी हुअी। अुसके बाद गाधीजीके दक्षिण अफ्रीकाके साथी और अनुयायी श्री कैलनबैकने बडे अुत्साहके साथ वरराजासे हाथ मिलाया और अुन्हें बधाअी दी। वे बोले: "वरराजा अेक सुन्दर नौजवान है।"

पास ही बैठे हुअे सरदार पटेलने विनोदपूर्ण कटाक्ष किया: "अिसमें आप जैसे कुआरे आदमीको किस बातका अितना अुत्साह चढता है!"

सरदारके अिस कटाक्षसे गांधीजीको भी हसी आ गअी। लेकिन कैलनबैक विनोद करनेमें कुछ कम नही थे। गांधीजीकी ओर अिशारा करके वे बोले: "लेकिन मैं कुआरा रहा अिस आदमीके पापसे!"

सब लोग हसकर गांधीजीकी तरफ देखने लगे। अिसलिअे वे आनन्दको बढाते हुअे बोले: "अिसीलिअे तो मैं अैसे विवाह-सम्बन्ध जोडकर अुस पापका प्रायश्चित्त कर रहा हू।"

अिसके बाद अुस कन्याके विवाहकी तारीख तय करके गांधीजीने सेवाग्रामसे वरको लिखा "आना अकेले और भेजेंगे दुकेले।"

परन्तु वरको अकेले जाना पसन्द नही आया। अिसलिअे वे सात मित्रोको साथ लेकर सेवाग्राम पहुचे। गांधीजीको पता चला कि सात आदमी आये हैं। अिसलिअे अुनका आदर-सत्कार करते हुअे गांधीजीने कहा "ओ हो, ये तो सप्तर्षि-गण आये हैं!"

सातमें से अेक भाअी अपनी पत्नीके साथ गये थे। वे बोल अुठे. "बापूजी, ऋषि अकेले नही हैं, साथमें अरुंधती भी है।"

४४. स्वराज्य अितनी देरसे आयेगा

गांधीजी हर कामको समय पर करनेका आग्रह रखते थे। लेकिन अेक बार अेक परिषदका काम शुरू करनेमें अुन्हें ४५ मिनटकी देर हो गअी। अिसका कारण यह था कि अेक लोकप्रिय नेता परिषदमें ४५ मिनट देरसे आये थे।

अुन्हें अुलाहना देते हुअे गांधीजीने विनोदमें कहा. "अगर हम अिसी तरह काम करेंगे, तो मुझे लगता है कि स्वराज्यके आनेमें भी ४५ मिनटकी देर हो जायगी।"

सभामें बैठे हुअे सब लोगोंके मुह पर मुसकराहट दौड गअी।

४५. तीखापन सह लिया जाय

अेक समय 'यंग अिंडिया' का संपादन श्री जे॰ सी॰ कुमारप्पा करते थे। अुनकी शैलीमें कुछ तीखापन होनेसे सब लोगोंको अुनके लेख कड़े मालूम होते थे। यह बात गांधीजीके ध्यानमें लानेके खयालसे अेक साथीने अुनसे कहा: "बापू, अहिंसाकी दृष्टिसे कुमारप्पाको अपने लेख नरमाअीसे लिखने चाहिये; अुनमें तीखापन नहीं होना चाहिये।"

गाधीजीने हसते-हंसते कहा: "कुमारप्पा मद्रासी हैं। अिसलिअे अुनके खूनमें मिर्चका थोड़ा तीखापन हो, तो अुसे हमें सहन कर लेना चाहिये।"

४६. अर्जुनोंसे

आश्रममें बालक कअी बार गाधीजीसे प्रश्न पूछते थे। गांधीजी प्रश्नोंके अुत्तर हमेशा सक्षेपमें ही देते थे, जिससे बालकोंको सन्तोष नहीं होता था। अिसलिअे अेक बार अेक बालकने गाधीजीसे पूछा:

"बापू, आप हमें गीताकी बातें सुनाते हैं। गीतामें अर्जुन अेक श्लोकमें प्रश्न पूछते हैं और श्रीकृष्ण अुसका अुत्तर पूरे अेक अध्यायमें देते हैं। लेकिन हम आपसे अेक पन्ना भरकर प्रश्न-पूछते हैं, तो भी आप अुसका अुत्तर अेक शब्द या अेक वाक्यमें ही निबटा देते हैं। क्या यह ठीक है?"

गांधीजी: "भगवान श्रीकृष्णको अेक ही अर्जुनके प्रश्नोंका अुत्तर देना होता था, जब कि मुझसे प्रश्न पूछनेवाले तो तुम कअी अर्जुन हो। मैं सबको लंबे अुत्तर कैसे दे सकता हूं?"

यह अुत्तर सुनकर सब अर्जुन हंस पड़े; और अुनकी शिकायत हंसीमें अुड़ गअी!

४७. अुसके साथ मैं शादी कर लूंगा!

१९४७ में दिल्लीमें अेशियायी देशोके प्रतिनिधियोकी अेक कान्फ-रेन्स हुअी थी। अुसमें तिब्बत देशके प्रतिनिधि भी आये थे। अेक दिन वे गांधीजीसे मिलने आये। अुस समय गाधीजीने अपना दोपहरका भोजन शुरू किया था। सब प्रतिनिधियोने लम्बे रेशमी अगरखे पहने थे, अलग अलग ढगसे अपने बाल सवारे थे और कानोमें सोनेके गहने पहन रखे थे। वे सब गाधीजीके लिअे कुछ न कुछ भेंट लाये थे।

अुनकी आव-भगत करते हुअे गाधीजीने अग्रेजीमें कहा, "मैं तिब्बती भाषा नही जानता और आप हिन्दुस्तानी भाषा नही जानते। अिसलिअे मुझे अग्रेजीमें बोलना पडेगा। बताअिये आपमें अग्रेजी कौन जानता है?"

दो प्रतिनिधि आगे आकर बोले "हम अग्रेजीके दुभाषिये है।"

गाधीजी: "अच्छा तो आप सब लोगोंसे कहिये कि 'मै आप सबका स्वागत करता हू, लेकिन कुछ दे नही सकता। मनुष्यको भला होना चाहिये, दानी होना चाहिये और सत्यवादी होना चाहिये। लेकिन मै भला नही हू, क्योंकि मै अकेला खा रहा हू। मैं दानी नही हू, क्योंकि मैं आपको कुछ दे नही सकता। और कुछ दू भी तो अुससे आपको सन्तोष नही होगा। हा, सत्यवादी मै जरूर हू, क्योंकि मैंने आपको यहां बुलवा लिया। मैंने कहा था कि समय न होगा तो भी तिब्बतके प्रतिनिधियोंसे मैं अवश्य मिलूगा। मैं सो रहा होअू तो भी मिलूगा, और खा रहा होअू तो भी मिलूगा।' अिसका अनुवाद आप तिब्बतीमें अिन्हे सुनाअिये। आप अिनसे भीतरके मेरे विनोदको भी समझे हैं या नही? अगर आप विनोदको न समझे हो, तो सारी बात बेकार हो जायगी।"

अिसके बाद तिब्बतके प्रतिनिधि गाधीजीको भेंटें देने लगे। अुनमें मलमलकी दो बारीक पट्टिया भी थी।

गांधीजी : "ये पट्टियां कहां बनी हैं?"

प्रतिनिधि : "चीनमें।"

गांधीजी : "चीनमें अिनकी बुनाओ ही हुओ है या अिनका सूत भी वहां काता गया है?"

प्रतिनिधि . "सूत भी चीनमें काता गया है।"

गांधीजी : "चीनकी वह कौन लड़की है, जो अितना बारीक सूत कातती है? अुसे खोजकर ले आअिये। आज तो मेरी अुमर शादी करने जैसी नहीं है, परन्तु अितना बारीक कातनेवाली लड़कीके साथ मैं शादी कर लूंगा।"

आसपास बैठे हुअे सब लोग खिलखिला अुठे।

गांधीजी : "मैं अैसा मानता था कि चीनमें लड़कियां बुनती ही हैं, कातती नहीं। लेकिन वे तो सुन्दर कताओ भी करती हैं।"

४८. पोपलेका भला फोटो कैसा?

अिसी मुलाकातमें अेक प्रतिनिधिने गांधीजीसे कहा : "आपकी अुमरको देखते हुअे आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।"

गांधीजी : "क्या करूं? सभी मुझसे ओर्ष्या करते हैं। वैसे स्वास्थ्य तो मेरा अच्छा है।"

प्रतिनिधि : "आपका अेक फोटो दीजिये।"

गांधीजीने होठों परसे अपना हाथ हटा लिया और कहा : "देखिये, अब मुंहमें दांत भी नहीं रहे। अिस पोपले आदमीका फोटो लेकर आप क्या करेंगे?"

प्रतिनिधि : "नहीं, नहीं, फोटो तो आपको देना ही होगा। आपको हमारे देशमें सब लोग जानते हैं और आपके प्रति आदरका भाव रखते हैं।"

गांधीजी : "तो फिर फोटोकी जरूरत ही कहां रह जाती है?"

प्रतिनिधियोंने अपना आग्रह छोड़ा नहीं। अन्तमें गांधीजीने कहा : 'दूसरी बार आप भारत आयें और मैं जिन्दा होअूं, तो आप मेरा फोटो ले जाअिये।"

४९. भगवानसे प्रार्थना करो

अेक बार श्रीपाद जोशी अपनी पत्नीके साथ गांधीजीसे मिलने आये। अुस समय कनु गांधी और अुनकी पत्नी आभाबहन भी गांधीजीके साथ थे। श्रीपाद जोशीने नअी नअी शादी की थी। अिसलिअे अुनके लग्नके विषयमें बात चली। किसीने मजाकमें नअी बहूसे कहा : 'यह अच्छा है कि तुम्हें तकलीफ देनेके लिअे सास-ससुर नहीं है।"

कनु गांधी (आभाबहनसे) "केवल तुम्हींको यह लाभ नहीं मिलता। ठीक है न?"

गांधीजी (आभाबहनसे) "तुम भगवानसे प्रार्थना करो कि मेरे सास-ससुर जल्दी मर जाय'।"

आभाबहन : "पर मेरी प्रार्थनासे थोड़े ही अैसा होनेवाला है?"

सब लोग हंस पड़े।

५०. मैं तो गरीब आदमी हूं

यह अुन दिनोंकी बात है जब गांधीजी पूनाके 'नेचर क्योर क्लिनिक' (कुदरती अुपचार-गृह) में रहते थे। अुनसे मिलनेके लिअे अेक परिचित बहन वहां आअी, लेकिन डेढ घंटे तक किसीने अुसे अन्दर गांधीजीके पास जाने नहीं दिया। आखिर भीतर आकर गांधीजीको प्रणाम करके वह बोली

"मैं कबसे भीतर आनेका प्रयत्न कर रही थी, पर कोअी आने दे तब न?"

गांधीजी (मुसकराकर) "लेकिन आखिर तुम आ तो पहुंची! बड़ी होशियार मालूम होती हो। परन्तु अपनी अिस होशियारी

और लगनसे सारे जीवनमें अुपयोग करना। जितना ज्ञान प्राप्त कर सको करना।"

अितनेमें गांधीजीकी नजर अुसके गलेके हार पर पड़ी। जिसलिअे वे बोले "अरे, यह क्या है? हमारा श्रीपाद तो बहुत गरीब है। परन्तु तुम अुडाअू मालूम होती हो। तुम पैसेवाली हो? धनी लोग पैसे किस तरह जमा करते हैं यह जानती हो? वे चोरी करके धनी बनते हैं।"

फिर गांधीजी हंसते-हंसते कहने लगे: "मैं बहुत गरीब हूं। रातको आकर तुम्हारा यह सोनेका हार मैं ले जाअूंगा।"

५१. यह कहांका न्याय?

अेक बार सेवाग्राममें आश्रमवासी गांधी-जयन्ती मना रहे थे। बापू और बा भी वहीं थे। कुछ लोग बा और बापूके लिअे भेंट भी लाये थे। बहनें बाके लिअे साड़ीकी भेंट लायी थीं। साड़ीको अपने पास रखा देखकर बापूने हंसकर कहा:

"अरे, क्या तुम मुझे साड़ी पहनाना चाहती हो?"

बहनें: "नहीं बापू, यह साड़ी तो बाके लिअे है।"

गांधीजी: "जयन्ती मेरी और भेंट बाको? यह कैसा न्याय है?"

५२. सार तो अिस डिब्बीमें है

गोलमेज परिषदमें भाग लेने गांधीजी अिंग्लैण्ड जा रहे थे, तब अेक अंग्रेज जहाज पर अुनका मजाक किया करता था। अेक दिन अुसने गांधीजीके बारेमें अेक व्यंगभरी कविता लिखी और पढ़नेके लिअे अुन्हें दी। गांधीजीने कागज फाड़कर कचरेकी टोकरीमें डाल दिये। लेकिन अुनमें लगी पिन निकाल ली और संभालकर अपनी डिब्बीमें रख दी।

गांधीजीको चिढानेकी तरकीब बेकार गभी देखकर वह अंग्रेज बोल अुठा : "अरे गांधी, वह कविता पढकर तो देखते; अुसमें आपके लिअे कुछ सारकी बात लिखी थी।"

गांधीजी (डिब्बीमें रखी हुअी पिनकी ओर अिशारा करके) : "हां, हां, अुसमें जो सारकी बात थी, अुसे मैंने अिस डिब्बीमें रख दिया है!"

गांधीजीके अिस विनोदपूर्ण कटाक्षसे पास बैठे हुअे अुनके साथी और दूसरे अंग्रेज हंस पडे। महात्माकी फजीहत करनेकी कोशिशमें अपनी ही फजीहत हुअी देखकर वह अंग्रेज खिसियाना पड गया और गांधीजीका मजाक करना भूल गया!

५३. स्वादकी हिंसामें आपत्ति नहीं

आन्तर-राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करनेवाले पत्रकार श्री लुअी फिशर अेक बार सेवाग्राममें गांधीजीके साथ हफ्तेभर रहनेके लिअे आये थे। अुन दिनों वे भोजन गांधीजीके साथ ही रसोडेमें करते थे।

अेक दिन खाते-खाते गांधीजीने कहा "फिशर, आपकी थाली अिधर लाअिये, मैं आपको थोडी साग-भाजी दे दूं।"

फिशर. "पालक वगैरा पत्ता-भाजियां तो दो दिनमें मैंने चौगुनी खाअी है। अब ज्यादा खानेकी अिच्छा नहीं है।"

गांधीजी : "आपको साग-भाजी अच्छी नहीं लगती?"

फिशर. "तीन दिनसे लगातार ये साग-भाजियां खा रहा हूं, अिसलिअे अब अुनका स्वाद रुचता नहीं।"

गांधीजी. "आपको अिनमें थोडा नमक और नीबूका रस मिलाना चाहिये।"

फिशर: "क्या आप मेरा स्वाद मारनेकी बात कहते हैं?"

गांधीजी (हंसकर) : "नहीं, नहीं, मैं तो स्वादको बढानेकी बात कहता हूं।"

और अुसका सारे जीवनमें अुपयोग करना। जितना ज्ञान प्राप्त कर सको करना।"

अिसनेमें गांधीजीकी नजर अुसके गलेके हार पर पड़ी। अिसलिअे वे बोले "अरे, यह क्या है? हमारा भारत तो बहुत गरीब है। परन्तु तुम अुडाअू मालूम होती हो। तुम पैसेवाली हो? धनी लोग पैसे किस तरह जमा करते हैं यह जानती हो? वे चोरी करके धनी बनते हैं।"

फिर गांधीजी हंसते-हंसते कहने लगे: "मैं बहुत गरीब हूं। रातको आकर तुम्हारा यह सोनेका हार मैं ले जाअूंगा।"

५१. यह कहांका न्याय?

अेक बार सेवाग्राममें आश्रमवासी गांधी-जयन्ती मना रहे थे। बापू और बा भी वहीं थे। कुछ लोग बा और बापूके लिअे भेंट भी लाये थे। बहनें बाके लिअे साडीकी भेंट लायी थीं। साडीको अपने पास रखा देखकर बापूने हंसकर कहा:

"अरे, क्या तुम मुझे साड़ी पहनाना चाहती हो?"

बहनें: "नहीं बापू, यह साड़ी तो बाके लिअे है।"

गांधीजी: "जयन्ती मेरी और भेंट बाको?-यह कैसा न्याय है?"

५२. सार तो अिस डिब्बीमें है

गोलमेज परिषदमें भाग लेने गांधीजी अिंग्लैण्ड जा रहे थे, तब अेक अंग्रेज जहाज पर अुनका मजाक किया करता था। अेक दिन अुसने गांधीजीके बारेमें अेक व्यंगभरी कविता लिखी और पढ़नेके लिअे अुन्हें दी। गांधीजीने कागज फाड़कर कचरेकी टोकरीमें डाल दिये। लेकिन अुनमें लगी पिन निकाल ली और संभालकर अपनी डिब्बीमें रख दी।

५६. परेशानी मुझे या राजाको?

बकिंघम महलमें रखे गये अेक समारोहमें राजा जॉर्जने गांधीजीको भी निमंत्रण दिया था। गांधीजी अपनी हमेशाकी पोशाकमें ही राजासे मिलनेके लिअे महलमें गये थे। बकिंघम महलमें आज तक किसीको वैसी पोशाकमें प्रवेश नहीं मिला था। अुस रिवाजके टूटनेसे कुछ दुःखी होकर अेक पत्रकारने गांधीजीसे पूछा

"मि० गांधी, यह पोशाक पहनकर शाही महलमें जाते हुअे आपको कोअी परेशानी या हिचकिचाहट नहीं हुअी?"

पत्रकारका प्रश्न सुनकर गांधीजी खिलखिला अुठे और बोले "मुझे परेशानी किस बातकी हो? हम दोनों पहन सकें अितने कपड़े तो अकेला राजा ही पहनकर महलमें बैठा था।"

५७. पिताको ही निमंत्रण नहीं?

अेक दिन गांधीजीके सबसे छोटे पुत्र श्री देवदास गांधी हमेशाकी तरह अुनसे मिलने आये। अुस दिन श्री देवदास प्यारेलालजीको अपने घर भोजनके लिअे ले जाना चाहते थे। अिसलिअे गांधीजीकी अिजाजत लेनेके खयालसे अुन्होंने कहा "बापू आज मैं प्यारेलालजीको भोजनके लिअे मेरे साथ ले जाना चाहता हूं।"

गांधीजी (हमेशाकी तरह जोरसे हंसकर) "जरूर ले जाओ, लेकिन तुम्हारे मनमें कभी मुझे भी भोजनके लिअे ले जानेका विचार आता है?"

पुत्रके साथ पिताका यह विनोद सुनकर वहां बैठे हुअे सब लोग हंस पड़े।

फिशर : "गाधीजी, आप तो अितने ज्यादा अहिंसक हैं कि स्वादको भी नही मारते !"

गाधीजी · "मनुष्य-जाति यदि स्वादको ही मारकर रुक जाती, तो मैं कभी विरोध न करता।"

फिर फिशरने शरीरका पसीना पोछते हुअे कहा : "दूसरी बार जब मैं भारत आअू तब या तो आप सेवाग्राममें 'अेयर कडीशनिंग' करा लीजियेगा या वाअिसरॉयके महलमें रहने चले जाअियेगा।"

गाधीजी (मुसकराकर) : "तबकी बात तब देखेंगे।"

अिस तरह विनोदपूर्ण वातावरणमें भोजन पूरा हुआ।

५४. बड़े दिनकी भेंट

गोलमेज परिषदसे गाधीजी भारत लौटे, अुससे पहले ही सरका-रने जवाहरलालजी तथा सीमाप्रान्तके गांधी खान अब्दुलगफ्फार खाको गिरफ्तार कर लिया था। यह खबर जब गाधीजीको २८ दिसम्बरको सुनाअी गअी तब अुन्होंने मजाक किया :

"यह तो हमारे अीसाअी वाअिसरॉय लॉर्ड विलिंग्डनकी दी अी बड़े दिन (क्रिसमस) की भेंट है।"

५५. धन चार और ॠण चार

गाधीजी अिंग्लैण्ड गये तब लन्दनके पत्रकारोने अुनके अर्द्धनग्न रकी ओर अिशारा किया। गांधीजीने गणितशास्त्रकी भाषामें द करते हुअे कहा :

"यह तो बिलकुल स्वाभाविक है। लेकिन आपकी पोशाकमें ार कपड़े (चार कपड़े ज्यादा) है और मेरी पोशाकमें ॠण पड़े (चार कपड़े कम) हैं। यह कोअी बड़ा फर्क है ?"

ाधीजीके अिस विनोदसे पत्रकार चुप हो गये और कोअी जवाब के।

५९. मुझे डर लगता है

अेक बार साबरमती आश्रममें पं० मोतीलाल नेहरू जैसे आदरणीय मेहमान आनेवाले थे। अुनके लिअे खाना तैयार करना था। लेकिन कस्तूरबा रसोअीघरका काम निबटाकर सो गअी थी। अुनकी नींदमें बाधा न पहुंचे, अिस ढगसे खाना बनानेका काम गांधीजीने आश्रमके लड़के-लड़कियोंको सौंपा। लेकिन थालीकी आवाज होनेसे बा जाग अुठी। थोड़ीसी बातचीतसे बा समझ गअी कि यह बापूका ही 'षड्यत्र' है। फिर तो वे भी रसोअी बनानेमें लग गअीं।

शामको प्रार्थनाके बाद बा बापूके सामने हाजिर हुअी और कमर पर हाथ रखकर अुलाहनेके स्वरमें बोलीं· "मुझे छोड़कर अिन्ही लोगोंको खाना बनानेका काम आपने क्यों सौंपा? क्या आप अैसा मानते है कि मै आलसियोंकी सरदार हू?"

आखोंमें प्रेमकी चमक भरकर गाधीजीने अुत्तर दिया

"क्या तुम नहीं जानतीं कि अैसे मौके पर मै तुमसे बहुत डर जाता हू?" बा विश्वास न आये अितने जोरसे हस पड़ी। अुनकी हसी पूछ रही थी "आप सच बोल रहे हैं?"

६०. स्वराज्य और कताअी

जिस दिनका यह किस्सा है, अुस दिन जवाहरलालजीने घटों गाधीजीसे चर्चा की। अुनके जानेके बाद लुअी फिशरने गाधीजीके कमरेमें प्रवेश किया। अुस समय गाधीजी चरखा चला रहे थे। अुन्हे सूत कातते देखकर फिशर बोले. "मै तो यह मानता था कि अब आपने कातना छोड़ दिया होगा।"

गाधीजी "नहीं, नहीं, कातना मैं कैसे छोड सकता हू? ४० करोड हिन्दुस्तानियोंमें से बालकों, बीमारो, अपगो वगैराको — जिनकी सख्या करीब १० करोड मानी जा सकती है — छोड़ दें। बाकी ३० करोड़ आदमी रोज अेक घटा भी कातें तो हमें स्वराज्य मिल जाय।"

५८. दोनोंने टोस्ट पिया

वाअिसरॉयके महलमें गांधी-अिर्विन-करार पर सही हो जानेके बाद गाधीजी और वाअिसरॉय दोनो बैठकर प्रसन्न मुद्रामें बातचीत कर रहे थे। अुस समय वाअिसरॉयने गांधीजीसे कहा: "चलिये, अिस आनन्दके अवसर पर हम अेक-दूसरेकी तन्दुरुस्तीके लिअे टोस्ट[1] पिये।"

परन्तु कहनेके बाद तुरन्त वाअिसरॉयको खयाल आया कि गांधीजी शराब नहीं पीते। अिसलिअे अुन्होंने जोड़ा: "चायके रूपमें।"

"मैं तो पानीमें थोड़ासा नमक और नीबूका रस डालकर ही टोस्ट पिअूगा।" वाअिसरॉयके प्रस्तावका समर्थन करके गाधीजीने हसते-हसते कहा।

अिसके बाद चर्चिलने गाधीजीको 'अधनगा फकीर' कहा था, अुसका स्मरण करके दोनों खूब हसे। लेकिन गाधीजी सचमुच वैसे फकीर हैं, अिसका सबूत देनेवाली अेक घटना अुसी समय वहां हो गअी।

महलके प्रसन्नतापूर्ण वातावरणमें गांधीजीने वाअिसरॉयसे विदा ली, लेकिन वे अपनी शाल लेना भूल गये।

शालके बिना गांधीजी सचमुच 'अधनंगे फकीर' ही लगते थे। चर्चिलके अुपरोक्त शब्दोंकी याद दिलाकर वाअिसरॉयने कहा:

"मि० गाधी, आपकी यह शाल रह गअी। आपके शरीर पर शालके सिवा दूसरा कोअी कपडा नही है। अिसलिअे अिसे भूलना आपको महंगा पड़ जायगा।"

अट्टहास्यके साथ गाधीजी बोले: "बेशक, महंगा पड़ जायगा।" और अुन्होंने अपनी शाल अुठा ली।

---

१. अंग्रेजोंके समाजमें किसी आनन्दके अवसर पर अेक-दूसरेके स्वास्थ्यकी कामना करनेके लिअे शराब पीनेका रिवाज है। अुसे टोस्ट कहा जाता है।

६२. बरतन साफ कराये

बिहारमें राजेन्द्रबाबू गांधीजीके साथ काम करने लगे, अुसके बाद अेक दिन भोजनसे निबटकर आश्रमके नियमके अनुसार बरतन मलने बैठे। वहीं गांधीजी भी अपने बरतन लेकर आये। राजेन्द्रबाबूको बरतन मलते देखकर गांधीजी हंसते-हंसते बोले :

"हाअीकोर्टके बड़े वकीलसे जूठे बरतन साफ करानेका श्रेय तो मुझे ही मिलेगा न?"

६३. मूर्खोंका सरदार!

गांधीजी जिन दिनों अपनी 'आत्मकथा' लिख रहे थे, अुन दिनों अेक प्रसिद्ध सज्जन अुनके पास आकर कहने लगे "आपको याद है न कि अुस प्रसगमें मैं भी आपके साथ था? वह प्रसग भी आप 'आत्मकथा' में लिखियेगा और अुसमें मेरा नाम भी आने दीजियेगा।"

अिस सम्बन्धमें अेक अन्य भाअीसे बात करते हुअे गांधीजीने कहा :
"वह मूर्खोंका सरदार है। अुसे पता नहीं कि 'आत्मकथा' ममीबाअी जैसे स्त्री-पुरुषोंको अमर बनानेके लिअे लिखी जा रही है, जिनकी महत्ता दुनिया कभी नहीं जानेगी।"

६४. टूटीफूटी हिन्दीकी कीमत!

अेक समय गांधीजीका मुकाम बंगलौरमें था। वहां विद्यार्थियोंके प्रतिनिधि और लेडी रमन गांधीजीको बंगलौरके सायन्स अिन्स्टिट्यूटमें पधारनेका आमंत्रण देने आये। अैसे दूसरे आमंत्रण गांधीजीने स्वीकार नहीं किये थे, परन्तु विज्ञानके लिअे गांधीजीका प्रेम होनेसे विद्यार्थियोंकी अिच्छा पूरी हो सकी। अुन्होंने अेक शर्त पर अिन्स्टिट्यूटमें जाना स्वीकार किया : "अगर सर सी० वी० रमन मुझे कोअी जादू बतायें तो ही, मैं वहां आ सकता हूं।"

फिशर: "कताओीके आर्थिक या आध्यात्मिक कारणसे?"

गांधीजी. "दोनों कारणोंसे। हिटलरके हुक्मसे नहीं, परन्तु अेक आदर्शसे प्रेरित होकर ३० करोड़ आदमी दिनमें अेक बार अेक ही काम करें, तो स्वराज्य प्राप्त करने जितनी अेकता हममें आ सकती है।"

फिशर: "मेरे साथ बात करते समय आप कातना रोक देते हैं। क्या स्वराज्यके मिलनेमें अितनी देर नहीं होगी?"

गांधीजी: "बेशक, आपने स्वराज्यको छह बार पीछे ढकेला है।"

यह सुनकर फिशर हंस पड़े।

६१. तुम्हारे लिअे भी महात्मा!

अेक समय बा बीमार थीं। गांधीजी रोज अुनसे मिलने जाते थे। परन्तु अेक दिन कामका ज्यादा बोझ होनेसे नहीं जा सके। दूसरे दिन गांधीजी बाके बिस्तरके पास जाकर खड़े हुअे, परन्तु बा कुछ बोली नहीं।

गांधीजीने बासे पूछा: "आज कैसी तबीयत है?"

पहले दिन वे मिलने नहीं आये, अिसका बाको बड़ा दुःख था। अिससे वे गुस्सेमें बोलीं. "आप तो बड़े आदमी हैं। महात्मा कहलाते हैं। आपको सारी दुनियाकी चिन्ता रहती है। अैसी स्थितिमें आप मेरी चिन्ता क्यों करते हैं?"

गांधीजी बाके गुस्से और व्यंगको समझ गये। मुसकराते हुअे बाके माथे पर अपना प्रेमल हाथ रखकर बोले:

"वाह, तुम्हारे लिअे भी मैं बड़ा आदमी और महात्मा हूं?"

बापूके अिस विनोदसे बाका गुस्सा अुतर गया और अुनके चेहरे पर मीठी मुसकराहट फैल गअी।

६२. बरतन साफ कराये

बिहारमें राजेन्द्रबाबू गांधीजीके साथ काम करने लगे, अुसके बाद अेक दिन भोजनसे निवटकर आश्रमके नियमके अनुसार बरतन मलने बैठे। वहीं गांधीजी भी अपने बरतन लेकर आये। राजेन्द्रबाबूको बरतन मलते देखकर गांधीजी हंसते-हंसते बोले·

"हाओीकोर्टके बड़े वकीलसे जूठे बरतन साफ करानेका श्रेय तो मुझे ही मिलेगा न?"

६३. मूर्खोंका सरदार!

गांधीजी जिन दिनों अपनी 'आत्मकथा' लिख रहे थे, अुन दिनों अेक प्रसिद्ध सज्जन अुनके पास आकर कहने लगे "आपको याद है न कि अुस प्रसंगमें मैं भी आपके साथ था? वह प्रसंग भी आप 'आत्मकथा' में लिखियेगा और अुसमें मेरा नाम भी आने दीजियेगा।"

अिस सम्बन्धमें अेक अन्य भाओीसे बात करते हुअे गांधीजीने कहा "वह मूर्खोंका सरदार है। अुसे पता नहीं कि 'आत्मकथा' ममीबाओी जैसे स्त्री-पुरुषोंको अमर बनानेके लिअे लिखी जा रही है, जिनकी महत्ता दुनिया कभी नहीं जानेगी।"

६४. टूटीफूटी हिन्दीकी कीमत!

अेक समय गांधीजीका मुकाम बंगलौरमें था। वहां विद्यार्थियोंके प्रतिनिधि और लेडी रमन गांधीजीको बंगलौरके सायन्स अिन्स्टिटयूटमें पधारनेका आमंत्रण देने आये। अैसे दूसरे आमंत्रण गांधीजीने स्वीकार नहीं किये थे, परन्तु विज्ञानके लिअे गांधीजीका प्रेम होनेसे विद्यार्थियोंकी अिच्छा पूरी हो सकी। अुन्होंने अेक शर्त पर अिन्स्टिटयूटमें जाना स्वीकार किया. "अगर सर सी० वी० रमन मुझे कोओी जादू बतायें तो ही मैं वहां आ सकता हूं।"

विद्यार्थियोंने हंसकर गांधीजीकी शर्त मान ली और वे हस्ताक्षर लेनेकी होड़में पड़ गये।

बादमें गांधीजी लेडी रमनके साथ कमला नेहरू स्मारक फण्डमें सहायता करनेकी बात कर रहे थे, अुसी बीच सर रमनने कमरेमें प्रवेश किया। लेडी रमन गांधीजीके साथ टूटीफूटी हिन्दीमें बात कर रही थीं। अुसकी टीका करते हुअे सर रमनने गांधीजीसे पूछा:

"अिनकी हिन्दीमें कोअी सार है?"

गांधीजी: "जरूर, आपके विज्ञान जितना सार तो है ही।"

विद्यार्थी खिलखिला अुठे।

६५. पति पर हुक्म चलाअिये

हमारे राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद अेक बार बीमार थे। गांधीजी अुनसे कुछ मिनटके लिअे मिलने गये और अुन्हें पूरा आराम लेनेकी सलाह दी। फिर गांधीजीने अुनकी पत्नीसे पूछा: "मालूम होता है आप अिनकी अच्छी तरह सेवा नहीं करतीं; ये बार-बार बीमार क्यों पड़ते हैं?"

राजेन्द्रबाबूकी पत्नी: "बापूजी, मेरी बात ये कहां मानते हैं? खूब काम करते हैं; और आराम लेते नहीं। अिसीलिअे बीमार पड़ते हैं।"

गांधीजी: "यह भी आपका ही दोष है। आपको अिन्हें आराम लेनेका हुक्म करना चाहिये। राजेन्द्रबाबू पतिके नाते आप पर कभी कभी हुक्म चलाते ही होंगे न? अिसलिअे आपको भी अिन पर हुक्म चलानेका अधिकार है।"

सारा कमरा हंसीसे गूंज अुठा।

६६. आशीर्वाद

अेक बार अेक नवपरिणीत दम्पति गांधीजीके आशीर्वाद लेने आये। अुनकी भडकीली पोशाक देखकर गांधीजीको भ्रम हो गया। अुन्हें पता नहीं था कि आनेवाले वर-वधू हरिजन हैं। अिसलिअे अुन्होंने पूछा: "तुमने शादी की अिसकी खुशीमें मेरे लिअे क्या लाये हो?"

वरराजा: "हम आपके लिअे फूलोंकी भेंट लाये हैं।"

गांधीजी: "लेकिन फूलोंसे काम नहीं चलेगा। तुम दोनों तो शादी करो, और मुझे केवल फूलसे सन्तोष करनेको कहते हो?"

वरराजा: "आपके लिअे हम अंगूर भी लाये हैं, बापू!"

गांधीजी (जोरसे हंसकर): "लेकिन अंगूर तो खट्टे होते हैं, यह तुम्हें पता है? अंगूरों या फूलोंसे काम नहीं चलेगा। दोनों सोचकर मेरे पास आओ कि हरिजनोंके लिअे तुम्हें क्या देना है?"

वर-वधू: "हम स्वयं हरिजन हैं।"

गांधीजी: "अैसा? तब तो तुम्हें नहीं परन्तु मुझे तुम लोगोंको कुछ देना चाहिये!"

फिर प्रेमसे वर-वधूकी पीठ थपथपाकर गांधीजीने दोनोंको आशीर्वाद दिया।

६७. अुपाधियां

अेक दिन गांधीजीकी डाकमें अैसे लिफाफे आये, जिन पर 'महम्मद गांधी' नाम लिखा था। कुछ लोगोंने गुस्सेमें अुन्हें मुसलमान कहा था। कुछ लोग अुन्हें साम्यवादी और कुछ अुन्हें जिन्नासाहबके गुलाम भी कहते थे। अनेक प्रकारसे गुस्सा बतानेवाले लोगों पर हंसकर गांधीजीने कहा:

"महात्माकी अुपाधि भी मुझे लोगोंने ही दी है। और बापूकी पदवी भी लोगोंने ही दी है। तब अगर ये सब अुपाधियां भी लोग दें, तो मुझे अुनका स्वागत ही करना चाहिये!"

६८. हथियारको जांच कर लीजिये

अेक बार गांधीजी दिल्लीमें लॉर्ड माअुन्टबैटनसे वाअिसरॉय-भवनमें मिलने गये। बातचीतके दौरानमें समय हो जानेसे वाअिसरॉय चाय पीने लगे और गांधीजी खाना खाने बैठे। गांधीजीका खाना श्री मनुबहन गांधी लाअी थी। गांधीजीके खाते-खाते ही वाअिसरॉयके अे० डी० सी० ने अुनका फोटो खींचा।

गांधीजीने हंसते हुअे अे० डी० सी० से कहा: "आपको देखना हो तो देख लीजिये कि अिस लड़कीके पास कोअी हथियार तो नहीं है।"

गांधीजीके अिस विनोद पर हंसकर वाअिसरॉय बोले: "मुझे पूरा विश्वास है कि आपकी सेविकाके पास अैसी कोअी चीज कभी हो ही नहीं सकती।"

६९. नाककी रक्षा

बारडोली सत्याग्रहके समय अेक दिन गांधीजीका मुकाम बारडोलीमें था। तब कुछ किसान गांधीजीसे मिलने आये। अेक किसानका परिचय गांधीजीसे कराते हुअे अेक मित्रने कहा: "ये चंद वल्लभभाअीसे कहने आये हैं कि हमने अपना सिर आपको दिया है, लेकिन अपनी नाक नहीं दी है।"

गांधीजी (हंसकर) "वल्लभभाअीकी भी तो नाक होगी न? लेकिन आपकी नाककी रक्षा करनेमें ही वल्लभभाअीकी और [illegible] है। यह तो ठीक है। लेकिन आपकी कसौटी तो अभी होनेवाली है।"

किसान "हम तैयार हैं।"

७०. मेरा समय बेकार नहीं गया

अेक समय कविवर टागोर गांधीजीके आश्रममें आये। अुन्होंने गांधीजीसे खूब बातें की और अन्तमें अुनका अितना समय लेनेके लिअे माफी मांगी।

गांधीजी: "नहीं, नहीं, अैसी कोअी बात नहीं। मेरा समय जरा भी बेकार नहीं गया। आप तो देख रहे हैं कि हमारी बातोंमें थोड़ा भी विघ्न पैदा किये बिना मैं कातता ही रहा हूं।"

७१. महात्मा-पद जिम्मेदार है

अेक बार अेक पत्रकार गांधीजीसे मिलने आये। अुन्होंने गाधीजीसे अनेक प्रश्न पूछे। गाधीजीके दिये हुअे अुत्तरोंके हर वाक्यमें विनोदका प्रवाह बहता था।

पत्रकार: "आप क्या सचमुच महात्मा है?"

गाधीजी: "मुझे अैसा नहीं लगता। मैं तो अपनेको अीश्वरके पैदा किये हुअे प्राणियोंमें से अेक नम्र प्राणी ही मानता हू।"

पत्रकार: "महात्माकी परिभाषा क्या है?"

गाधीजी: "महात्मा होअू तो ही महात्माकी परिभाषा बताअू न?"

पत्रकार: "अगर आप महात्मा नही है तो अपने अनुयायियोंसे वैसा कहते क्यो नही?"

गाधीजी: "ज्यों ज्यो मैं अुन्हे मना करता हू, त्यो त्यो वे महात्मा शब्दका अधिक अुपयोग करते हैं।"

पत्रकार: "पहले आप तीसरे दरजेमें यात्रा करते थे। अब क्यों स्पेशल ट्रेनमें यात्रा करते है?"

गाधीजी: "अफसोस! स्पेशल ट्रेनके लिअे मेरा महात्मा-पद जिम्मेदार है।"

पत्रकार: "स्वराज्य आनेके बाद आपका स्थान कहा रहेगा?"

७४. लुच्चा गांधी !

भारतके प्रश्नका हल खोजनेके लिअे लॉर्ड माअुन्टबैटन और गांधीजीकी बातचीत दो घंटे तक चली, लेकिन दोनों किसी निश्चित बात पर सहमत नहीं हो सके। अन्तमें लॉर्ड माअुन्टबैटनने गांधीजीसे पूछा: "आखिर अिस प्रश्नका हल क्या है ?"

गांधीजी भारतके बटवारेके खिलाफ थे, अिसलिअे अुन्होंने कहा "आजके नेहरू मंत्रि-मंडलको भंग कर दीजिये और अैसा मंत्रि-मंडल बनानेके लिअे जिन्ना साहबको बुलाअिये, जिसमें सारे मंत्री मुसलमान हों।"

माअुन्टबैटन: "आपके अिस प्रस्तावके सम्बन्धमें मि० जिन्नाकी क्या प्रतिक्रिया होगी ?"

गांधीजी: "जिन्ना साहब यही कहेंगे कि यह लुच्चा गांधी फिर अेक प्रस्ताव लेकर आ गया।"

गांधीजीका अुत्तर सुनते ही माअुन्टबैटन हंस पड़े और हंसते-हंसते ही अुन्होंने कहा "अैसा कहनेमें क्या वे सच्चे साबित नहीं होंगे ?"

गांधीजी "नहीं, मैं पूरी अीमानदारीसे मुस्लिम मंत्रि-मंडल बनानेकी बात कह रहा हूं। आपके पहलेके वाअिसरॉयने जो पाप किये हैं, अुसके परिणामोंका सामना आपको करना ही होगा।"

७५. अेक लाख लड़कियोंका पिता !

ब्रिटिश कैबिनेट मिशनके सदस्य गांधीजीके साथ बातचीत कर रहे थे, तब ब्रिटिश पार्लियामेन्टकी अेक स्त्री-सदस्या श्रीमती निकोल्स भी अुपस्थित थी। सारी बातचीत राजनीतिक प्रश्नों पर हो रही थी, अिसलिअे अुसमें कुछ विविधता लानेके लिअे श्रीमती निकोल्सने गांधीजीसे परिवार-सम्बन्धी अेक प्रश्न किया

"मि० गांधी, आपकी लड़कियां कितनी हैं ?"

गाधीजी (हंसकर) : "मेरी तो अेक लाख लड़कियां हैं। मेरे अुत्तरसे आपको सन्तोष हुआ न?"

श्रीमती निकोल: "मुझे तो हो गया, लेकिन क्या आपको दर-असल हुआ?"

७६. भगवानकी हार!

बिहारमें मुसलमानोंकी हत्याके समाचार सुनकर गाधीजी नोआखालीसे बिहारके लिअे रवाना हुअे। गाधीजी किस स्टेशन पर अुतरेंगे, यह गुप्त रखा गया था। लेकिन मुस्लिम नेताओको पता था। अतः अब्दुलबारी साहब और डॉ० सैयद महमूद साहब स्वागतके लिअे स्टेशन पर पहुच गये थे। वातावरणमें अुदासी छायी हुअी थी। लेकिन स्टेशन पर अुन्हें देखते ही गाधीजी बोले·

"क्यों आप तो अभी तक जिन्दे हैं न?"

फिर अुनकी नजर कैमेरावालो पर पड़ी। अिसलिअे वे कहने लगे: "अरे, अिन फोटोग्राफरो और अखबारनवीसोंसे तो भगवान भी नही बच सकता!"

वातावरणमें बिजलीकी गतिसे हास्य फैल गया।

७७. बंधी मुट्ठी

अेक बार अेक विदेशी मित्र गाधीजीसे मिलने आये। वे हस्त-रेखा पढ़नेमें बड़े कुशल थे। अुन्होंने गाधीजीसे अपना हाथ दिखानेको कहा।

हाथ दिखानेसे अिनकार करते हुअे गांधीजीने कहा:

"मैंने किसीके सामने आज तक अपनी मुट्ठी कभी खोली नही है। अिसे बंधी ही रहने दीजिये।"

७८. सींगवाला आदमी !

सुप्रसिद्ध पत्रकार लुअी फिशर दूसरी बार गांधीजीसे मिलने आये, तब अुनका स्वागत करते हुअे गाधीजी बोले "

"तो फिशर, आप आ पहुचे ! लेकिन देखिये, अिन चार वर्षोंमें मैं कोअी अधिक देखनें लायक नही हो गया हू।"

फिशर: "मैं भी आपसे अलग राय रखनेकी हिम्मत भला कैसे कर सकता हू ?"

अिस प्रकार विनोद और हास्यमे दोनोके मिलनका आरम्भ हुआ। बादमें फिशर गाधीजीके साथ यात्रामें जुड गये। मूसलधार बारिश गिर रही थी। फिर भी हर स्टेशन पर लोग हजारोकी सख्यामें गाधीजीके दर्शनोंके लिअे आते थे, अेक-दूसरेसे आगे बढ़नेकी होड लगाते थे और 'गाधीजीकी जय' के नारोंसे आकाशको गुजा देते थे।

अेक स्टेशन पर चौदह-पन्द्रह वर्षके दो लडके गीले शरीरसे गाधीजीकी खिड़कीके सामने खुशीसे नाचने लगे और तालिया बजाते हुअे 'गाधीजी, गाधीजी, गाधीजी' कहकर किलकारिया मारने लगे।

बच्चोंकी किलकारिया सुनकर गाधीजीको भी मजा आ गया। फिशरने अुनसे कुतूहलपूर्वक पूछा "आपके बारेमें अिन बच्चोकी क्या कल्पना होगी ?"

गाधीजीने दोनो कनपटियो पर मुट्ठिया बाधकर और अगूठे अूचे अुठाकर कहा:

"सींगवाला आदमी ! अेक अद्भुत प्राणी !!"

७९. यह भेंट किसने दी थी?

अेक बार जनरल स्मट्सने गांधीजीको अपने यहां आमन्त्रित किया। यह अेक योद्धाको दूसरे योद्धाका आमंत्रण था। गांधीजी अुसे स्वीकार करके जनरल स्मट्सके घर गये। अुन्होंने गांधीजीसे हाथ मिलाकर अुनका स्वागत किया और अुन्हें घरके भीतर ले गये। गांधीजी जनरलका साज-सामान देखने लगे। देखते-देखते दोनों अेक आलमारीके पास आये। अुसमें जनरल स्मट्सको मिली हुआी सारी भेंटें सजी थीं। अुनमें से चमड़ेकी अेक सादी चप्पल-जोड़ बाहर निकालकर स्मट्सने गांधीजीसे पूछा : "मि० गांधी, आपको याद है यह चप्पल-जोड़ मुझे किसने दी थी?"

"आपकी तोप-बन्दूकको मात देनेवाली अिस जोड़को क्या मैं नहीं पहचानूंगा?"

गांधीजीका अुत्तर सुनकर जनरल स्मट्स जोरसे हंस पड़े। वह चप्पल-जोड गांधीजीने स्मट्सके कैदीके रूपमें दक्षिण अफ्रीकाकी अेक जेलमें बनाआी थी और जनरलको भेंट की थी। महापुरुषकी अुस भेंटको जनरल स्मट्सने अपनी आलमारीमें सुरक्षित रखा था।

८०. गाड़ी पटरी पर आयेगी जरूर

अेक बार सरदार पटेल और गांधीजी दाहोदकी अेक आ सभामें जा रहे थे। अुसी दिन श्री अिन्दुलाल याज्ञिकने अखबार गांधीजीके विषयमें अेक लेख लिखा था। अुस लेखकी ओर सरदार गांधीजीका ध्यान खींचा।

वे हंसकर बोले :

"आज तो गाड़ी पटरी परसे अुतर गआी है। लेकिन किसी दिन फिरसे पटरी पर आयेगी जरूर।"

श्री लल्लुभाअी मकनजीकी चार बोधप्रद पुस्तकें

गांधीजीके पावन प्रसंग — १

राष्ट्रपिता महात्मा गाधीके ये जीवन-प्रसंग छोटे-बडे, बालक-बूढे सभीके लिअे समान रूपसे दिलचस्प और बोधप्रद हैं। परन्तु अिनके पीछे खास हेतु प्रौढ़ विद्यार्थियोंके लिअे रोचक और प्रेरक साहित्य पेश करनेका है।

कीमत ०.३७ डाकखर्च ०.१३

गांधीजीके पावन प्रसंग — २

श्री दिलखुश दीवानजी अिन प्रसंगोके बारेमें लिखते हैं: "ये सरल तथा सुबोध प्रसग जीवन और जगतको पावन करनेवाले हैं। ये हमारे जीवनको सदा जाग्रत और प्रगतिशील बनाये रखनेकी अखूट प्रेरणा प्रदान करते है।"

कीमत ०.३७ डाकखर्च ०.१३

गांधीजीके पावन प्रसंग — ३

समाज-शिक्षणकी दृष्टिसे गाधीजीके जीवन-प्रसंगोंको बालकों और प्रौढ़जनों तक पहुचानेवाली यह तीसरी पुस्तिका है। अिन्हें पढ़कर हर आदमीका जीवन अूचा अुठ सकता है और अुसमें शांति और सन्तोप बढ़ सकता है।

कीमत ०.३५ डाकखर्च, ०.१३

जीवनकी सुवास

अिस छोटीसी पुस्तिकामें सुकरात, गाधीजी, देशबन्धु दास, , मालवीयजी, मौलाना आजाद, प० मोतीलाल नेहरू वगैरा , जीवनकी सुवासको वातावरणमें फैलानेवाले बोधप्रद प्रसग

डाकखर्च ०.१३

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद–१४